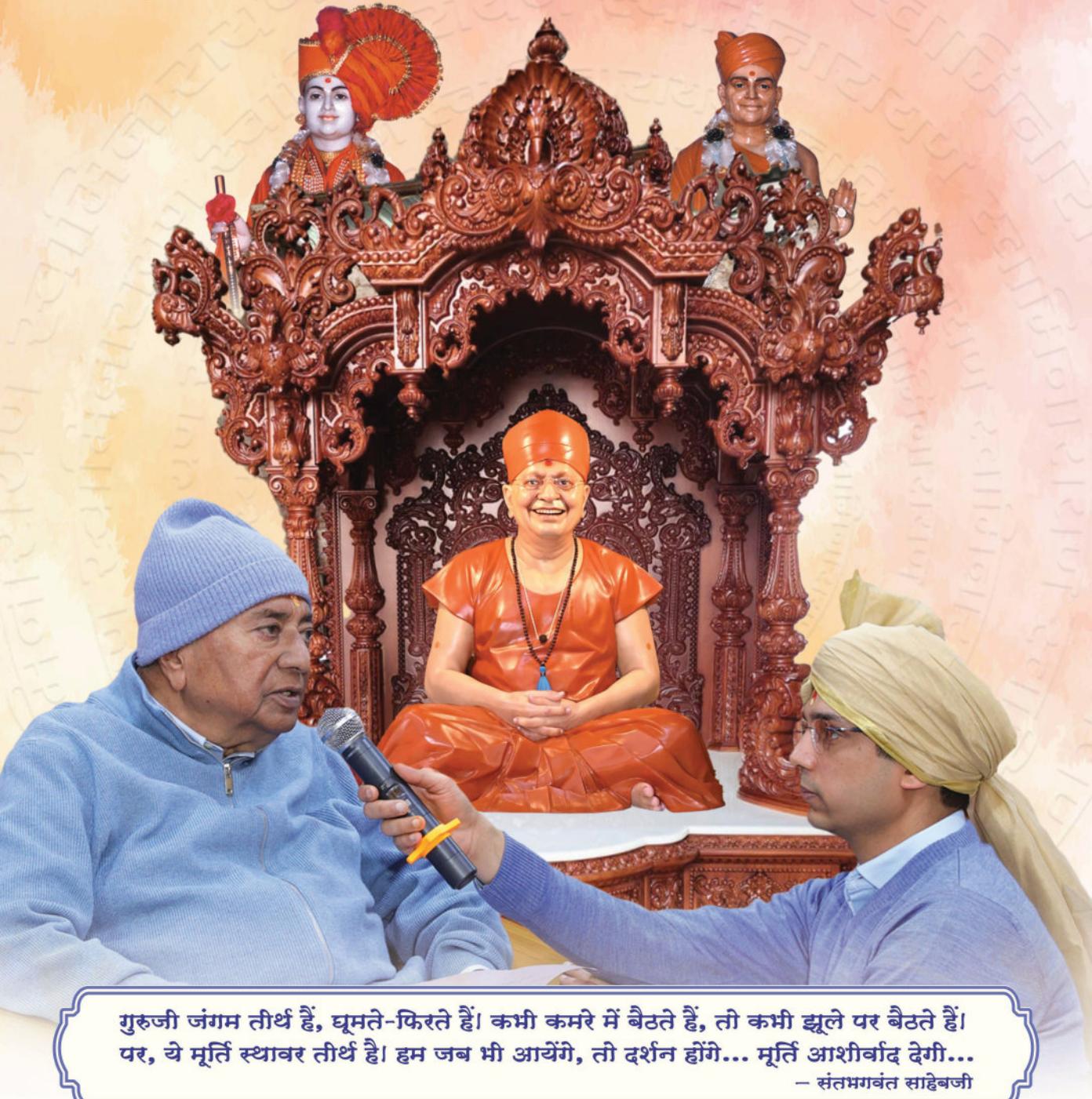


भागवत कृष्ण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निखात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्पदा ॥
महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका



गुरुजी जंगम तीर्थ हैं, धूमते-फिरते हैं। कभी कमरे में बैठते हैं, तो कभी झूले यर बैठते हैं।
यर, ये मूर्ति स्थावर तीर्थ है। हम जब भी आयेंगे, तो दर्शन होंगे... मूर्ति आशीर्वाद देगी...

— संतभगवंत साहेबजी

2 जुलाई 2023 – गुरुपूर्णिमा की पूर्वसंध्या पर
अक्षरज्योति में य.पू. गुरुजी की संगमरमर की मूर्ति स्थापना...



अक्षरज्योति के लिये अपनी मूर्ति की अनमोल मेंट देकर
प.पू. गुरुजी ने मुक्तों के ग्रति अतिशय ग्रेम की क्षितिज यार कर दी...



मूर्ति में य.प्य. गुरुजी को हाज़िराहजूर मान कर, तीव्र पुकार करके
अपने स्वभावों से परे हो जायें—यहीं प्रार्थना!



ये साधु की मूर्ति है। साधु का दिल माँ जैसा होता है।
मूर्तिमान माँ दीदी की गोद में निश्चिंत व निर्भय होकर सब चैन से जीवन जियें...

— य.पू. गुरुजी





3 जुलाई 2023—गुरुपूर्णिमा का महासंगलकारी दिन...





महापूजा
एवं
मुक्तों की
ओर से
य.पू. गुरुजी
को
हार अर्पण...





गुरुपूर्णिमा निमित्त गुरुपूजन...



बहनों की ग्रेणामूर्ति प.पू. दीदी को
हार अर्यण एवं हृदय के भाव से पूजन...





2023 की अविस्मरणीय ऐतिहासिक गुरुपूर्णिमा...

गुरुपूर्णिमा-व्यासपूर्णिमा का पावन पर्व हिंदू, बौद्ध एवं जैन धर्म इत्यादि में बहुत ही महत्वपूर्ण है। आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला यह विशिष्ट दिन, 'गुरु' यानि आध्यात्मिक शिक्षक या मार्गदर्शक का और 'पूर्णिमा' पूर्णचंद्र का संकेत देता है। सो, पूर्ण प्रकाशित प्रभु के अखंड धारक प्रगट संत के प्रति ऋण अदा करने और उन्हें पूर्ण रूप से समर्पित होकर प्रार्थना करने का यह मंगल दिन है।

गुरु जो कि गोविंद से भी बड़े हैं—क्यों?

क्योंकि—

- * गोविंद ने हमें नज़र दी, पर सही नज़रिया गुरु ने दिया।
- * गोविंद ने हमें जीवन दिया, पर जीने का मङ्गसद गुरु ने दिया।
- * गोविंद ने हमें बुद्धि दी, पर ब्रह्मज्ञान गुरु ने दिया।
- * गोविंद ने हमें जन्म दिया, पर जन्म-मरण से मुक्ति गुरु ने दी।

सच, गुरु के साथ दृढ़ संबंध के बिना तो जीव का हर प्रयास अधूरा है। जीवन में जब हम भटक जाते हैं, तो एक मात्र गुरु ही हमें आंतरिक उजियारा देकर उबार लेते हैं। एक शिल्पकार की भाँति हमारे जीवन को सही आकार देने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं।

स्वामिनारायण संप्रदाय भी गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित है। **पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंदस्वामी** ने परम पूज्य रामानंदस्वामी को अपना गुरु स्वीकार करके, उनसे दीक्षा प्राप्त की और जीवन में गुरु की अनिवार्यता सबको समझाई। इसके अतिरिक्त, साधुता की मूर्ति **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** ने गुणातीतभाव को प्रगटाये संतों की गुरु परंपरा दैदिव्यमान करके जीवों को अखंड सनाथ होने का वरदान दिया। फलस्वरूप, गुणातीत परंपरा में अनादि महामुक्त भगतजी महाराज-जागास्वामी-कृष्णजी अदा, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी, ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी-अक्षरविहारीस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई जैसे ज्योर्तिधरों की गोद पाकर हम सब निहाल हो गये। ऐसे कृपासाध्य प्रभु को कोटि-कोटि नमन!

पिछले वर्ष 13 जुलाई 2022, गुरुपूर्णिमा के पवित्र अवसर पर, भगवान भजती बहनों के निवास स्थल **अक्षरज्योति** के 'नैमिषारण्य' हॉल में अत्यंत उमंग-उल्लास से प.पू. गुरुजी की प्लास्टर ऑफ पॉर्ट्रियल की मूर्ति स्थापित की थी तथा 'साधु पर्व' के मंगल उत्सव के दौरान 25 दिसंबर 2022 को मंदिर में प्रत्यक्ष स्वरूपों की हाज़िरी में प.पू. गुरुजी की संगमरमर की मूर्ति



पथराई गई। अबकी बार गुरुपूर्णिमा के मंगलकारी दिन की पूर्वसंध्या यानि 2 जुलाई 2023 को अक्षरज्योति के 'नैमिषारण्य' हॉल में P.O.P. की जगह, लकड़ी पर नकाशी किये हुए सुंदर आसन पर प.पू. गुरुजी की संगमरमर की मूर्ति पथराई गई। जो कि आध्यात्मिक इतिहास में अपने आश्रितों के प्रति प.पू. गुरुजी की अतिशय प्रीति कही जाये।

मूर्ति इतनी जीवंत है कि ऐसा प्रतीत होता है कि प.पू. गुरुजी स्वयं विराजमान हैं। उपस्थित सभी मुक्तों को दिव्यता का अनुभव होता है। मूर्ति स्थापना विधि का कार्यक्रम 20 मिनट की धुन से आरंभ हुआ। धुन के बाद सेवक पू. अभिषेक और पू. कार्तिक जानी ने पूजन विधि के श्लोकों का गान किया।

इस दौरान —

श्री ठाकुरजी एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों का पूजन पू. आनंदस्वरूपस्वामी और पू. आशीष शाह ने किया।

प्रत्यक्ष विराजमान प.पू. गुरुजी का पूजन करके, पू. सुहृदस्वामीजी एवं पू. प्रमीतभाई संघवी ने प.पू. गुरुजी की मूर्ति का पूजन किया।

प.पू. गुरुजी को मुंबई से पू. डॉली दीदी द्वारा बनाया हार पू. दीपक अग्रवाल एवं पू. हीरक आचार्य ने अर्पण किया।

और...

प.पू. गुरुजी की मूर्ति को पू. नवीनभाई शाह, पू. कीर्तिभाई जानी व पू. नक्षत्र ने अक्षरज्योति की बहनों द्वारा बनाया गया हार अर्पण किया।

तदोपरांत प.पू. सुहृदस्वामीजी, सभी संतों, युवकों, उपस्थित हरिभक्तों तथा बहनों-भाभियों ने श्री ठाकुरजी सहित प.पू. गुरुजी की मूर्ति की आरती करी। मंत्रपुष्पांजलि एवं आशीर्वाद श्लोक से विधि संपन्न हुई।

तत्पश्चात् दिसंबर 2022 में प.पू. गुरुजी की मूर्तिप्रतिष्ठा हेतु, हरिधाम से प.पू. दासस्वामीजी ने 'आ तो साक्षात् प्रभुनी मूरत छे' भजन बना कर भेजा था, वह पू. डॉ. दिव्यांग ने भावपूर्ण हृदय से प्रस्तुत किया और फिर पू. राकेशभाई शाह व पू. डॉ. दिव्यांग ने 'मूर्ति का आनंद अंतर में समाये ना' भजन गाकर सभी को प.पू. गुरुजी की मूर्ति में निमन कर दिया। अंत में संतभगवंत साहेबजी को प्रत्यक्ष मानते हुए, 25 दिसंबर 2022 को उनके द्वारा दिये आशीर्वाद की audio clip से निम्न आशीर्वाद प्राप्त किये —

...समस्त गुणातीत समाज के लिये, और विशेष तौर से दिल्ली-पंजाब के लिये खूब-खूब आनंद का दिन है। अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के विषय में एक ही वाक्य में कहा जाता है कि हम सब प्रगट के उपासक हैं। प्रभु मानव रूप में हमारे बीच में हैं। ऐसे गुणातीत संत के द्वारा हमें



दर्शन-आशीर्वाद देते हैं। भगवान का संपूर्ण सुख उनके द्वारा प्राप्त होता है। गुरुजी ऐसे ही गुणातीतभाव के संत हैं। गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति देख कर कई तो कहते हैं कि क्या गुरुजी ने अपनी मूर्ति पधरा दी है? गुणातीत परंपरा के ये साधु हैं। **काकाजी के हम खूब-खूब आभारी हैं।** काकाजी की आङ्गा से गुरुजी दिल्ली आये। लौकिक दृष्टि से देखें तो यही कहते कि दिल्ली में क्या है? वहाँ कोई भगत नहीं है, कोई स्वामिनारायण को मानने वाला नहीं है... लेकिन बड़े पुरुष की दृष्टि में क्या है? वो बुद्धि से समझ नहीं आता, लेकिन गुरुजी को काकाजी के प्रति प्रेम था। काकाजी ने कहा है कि बस दिल्ली जाना है... तो गुरुजी दिल्ली आये और आज देखते हैं कि संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थ भक्तों का कितना बड़ा समाज तैयार कर दिया। **हमारे प्रगट की उपासना यानि जो अक्षरपुरुषोत्तम हैं, उन्हीं का स्वरूप गुरुजी हैं।** उनके द्वारा प्रभु हमें आशीर्वाद-दर्शन दे रहे हैं। आज प्रेमस्वामी, निर्मलस्वामी, बापुस्वामी, आश्चिनभाई, शांतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई, हेमंतभाई वशी सब संतों ने मिल कर प्राणप्रतिष्ठा की है। गुरुजी जंगम तीर्थ हैं, धूमते-फिरते रहते हैं। कभी कमरे में बैठते हैं, तो कभी झूले पर बैठते हैं। पर, ये मूर्ति स्थावर तीर्थ है। हम जब भी आयेंगे, तो दर्शन होंगे। गुरुजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का यह बहुत बड़ा काम हुआ। हमारी प्रगट की उपासना है, तो गुरुजी की मूर्ति आशीर्वाद देगी...

इसके पश्चात् पू. राकेशभाई ने अक्षरज्योति की बहनों की ओर से प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में निम्न आशीष याचना की—

हे गुरुजी! आपने अक्षरज्योति के लिये अपनी मूर्ति की अनमोल भेंट देकर, हमारे प्रति आपके अतिशय प्रेम की सीमा नहीं, द्वितिज पार कर दी... यह एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना है, इसे साधारण मान कर हम किसी लापरवाही में ना रहें और इस मूर्ति में आपको हाज़राहजूर मान, तीव्र पुकार करके अब आपने स्वभावों से परे होकर आपको हाश कर दें, ऐसी आपके श्रीचरणों में प्रार्थना और आशीष याचना...

तब आशीष वर्षा करते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा—

अक्षरज्योति की बहनों ने खूब आग्रह करके ये मूर्ति पधराई हैं। ये साधु की मूर्ति है। साधु का दिल माँ जैसा होता है। साधु का पर्याय भी एक माँ के रूप में बोला जाता है। पहली बात तो ये कि माँ के पास कैसा भी रुठा हुआ, रोता हुआ, अकड़ा हुआ लड़का जाता है, रौफ जताता है, तो माँ उसे प्यार देकर, खिला के, समझा के, मना के आनंद करा देती है। इसी तरह पहली तो बात ये कि कैसे भी विपरीत संज्ञों से घिरा हुआ या घिरी हुई कोई भी व्यक्ति यहाँ आकर दिल की सच्चाई से गदगद होकर प्रार्थना करे, तो यहाँ आनंदी दीदी के रूप में मूर्तिमान माँ भी बैठी हुई है। तो, उसकी गोद में उसे शाता (शांति), निश्चिंतता, निर्भयता, एक हाश (ठंडक) मिले और वो फिर आनंदित हो जाये।



કાકાજી બતાતે થે કિ ઉનકી નજર સે દુનિયા કે દો પિવચર બહુત અછે, બદ્ધિયા, શ્રેયકારી, કલ્યાણકારી ઔર હિતકારી કહે જાતે હોયાં। એક અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ ઔર દૂસરા મધર મેરી કા હૈ, જિસકી ગોદ મેં બાલક કિતની નિશ્ચિંતતા સે સોયા હુઅા હૈ, ઉસે કોઈ ચિંતા નહીં હૈ। ઇસી તરહ હમ મી યહીઁ આકર દીદી કી ગોદ મેં નિશ્ચિંત ઔર નિર્મય હોકર ચૈન સે જીવન જિયોં। કાકાજી કે શબ્દોં મેં યે દૂસરી પ્રાર્થના હૈ। નર્ઝ ઔર કોઈ બાત કરની હૈ નહીં। હમેં જો પ્રાપ્તિ હુઝી હૈ, એસી પ્રાપ્તિ જગત મેં ઔર કિસી કો હુઝી હી નહીં હૈ। ક્યોંકિ જિસ ભગવાન કો સારા જગત દ્વાંઠા હૈ, ઇન્હોંને હમેં અપની ગોદ મેં બિઠાયા હુઅા હૈ। ઇન્હોંને હમેં અપની ગોદ દી હૈ। તો, ઉસ ગોદ મેં ખેલતે-આનંદ કરતે રહેં, યહી આજ કે દિન પ્રાર્થના હૈ। મેં કિસી સે બાત મી કરને વાલા થા કિ યે મૂર્તિ-સ્ટેચ્યુ હૈ, વો કુછ હૃષ્ટ-પૃષ્ટ નજર આતા હૈ। અમી મેરા જેસા શરીર હૈ, ઉસસે યહ ડેઢ ગુના લગતા હૈ। આપ સબ લોગ આશીર્વદ દો કિ ફિર સે ડેઢ ગુના બઢ જાયે ઔર સાથ-સાથ પહલે જેસા હી એવિટચ રહ્યોંને જો મોટા હો જાતા હૈ, વો સુસ્ત હો જાતા હૈ... પર, મેં આપ લોગોં કી સેવા મેં હમેશા એવિટચ રહ્યોંને એસી આપ પ્રાર્થના કરતે રહના।

પ.પૂ. ગુલજી સે આશીષ પાકર, મંદિર મેં પ્રસાદ લેકર સભી ને પ્રસ્થાન કિયા।

અગલે દિન 3 જુલાઈ કી સુબહ 9:30 બજે ગુરુ-શિષ્ય કે પ્રગાઢ સંબંધ કી પ્રાર્થના કરતે હુએ, પૂ. મૈત્રીશીલસ્વામી ને 'કલ્પવૃક્ષ' હોલ મેં મહાપૂજા આરંભ કી। કૃત્રિમ ગેંડે કે ફૂલોં કે તોરણોં સે શ્રી ઠાકુરજી કે સિંહાસન કી સજાવટ કી થી। શ્રીજી મહારાજ ને મૈજેંટા (ગહરે ગુલાબી) રંગ કે સુંદર વણ્ણ-પાઘ ઔર કંઠ મેં ઉંહેં પ્રિય મોગરે કે પુષ્પ કી માલા ધારણ કી થી। ગુણાતીત સ્વરૂપોં કી મૂર્તિયોં ઔર પ.પૂ. ગુલજી કી મૂર્તિ કો મી મોગરે કી માલાયેં અર્પણ કી થીં। પ.પૂ. ગુલજી કે સોફે કે પીછે થર્માકોલ કે કલાત્મક રંગ-બિરંગે દો મોરોં સે સુસજ્જા કી થી, જિસકે મધ્ય મેં શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ સહિત ગુલહરિ કાકાજી કી મૂર્તિ અંકિત કી થી।

મહાપૂજા કે પશ્ચાત્ જગરાંવ કે પૂ. અનૂપ ટાગંરીજી ને 'હે ગુરુદેવ પ્રણામ આપકે ચરણોં મેં...' ભજન પ્રસ્તુત કિયા ઔર જગરાંવ કે હી પૂ. નરેંદ્ર શર્માજી ને જીવન મેં ગુરુ કી અનિવાર્યતા ઔર પ.પૂ. ગુલજી કે સાથ અપને અનુભવ પ્રસંગ વ્યક્ત કર મહિમાગાન કિયા।

જિસ પ્રકાર મૂલ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીજી ને અપના સર્વચ શ્રીજી મહારાજ કે શ્રીચરણોં મેં અર્પણ કરકે ખ્યાં કો ઉનમેં વિલીન કર દિયા થા, ઉસી પ્રકાર ગુલહરિ કાકાજી કો પૂર્ણત: સમર્પિત હોકર, ઉનકી અસ્થિમતા મેં રહકર, ઉનકે અભિપ્રાય કી ભવિત કરતે કાકામય પ.પૂ. ગુલજી ને મુક્તોં કો માર્મિક આશીર્વદ દિયા—

ગુલપૂર્ણિમા કે દિન સભી એક ભાવના સે અપને ગુરુ કા પૂજન કરને કે લિયે જાતે હોયાં કે પૂજન કરકે આશીર્વદ મિલે। મહારાજ ને વચનામૃત મેં બતાયા હૈ કે રોલી, ચંદન, કંકુ સે ગુરુ કા પૂજન તો કરના હી હૈ। લેકિન, ઇન્હોંને વિશિષ્ટ ગુલપૂજન કા અર્થ બતાયા કી અપને ગુરુ કો



जीवन में पल-पल कर्ता-हर्ता मान कर जो जीवन जीता है, उसने सच्चा गुरुपूजन किया। तो आज के दिन यही भावना रखनी है कि हमारे जीवन में जो कुछ हुआ है, जो कुछ हो रहा है और आगे भी जो कुछ होगा, उसके पल-पल के कर्ता वे ही हैं; क्योंकि हर्ता तो वे होते ही नहीं। कोई माँ अपने बच्चे से कुछ छीन नहीं लेती। जबकि यदि बच्चे की कोई चीज़ खो गई या टूट गई हो, तो वो सामने से नई लाकर देती है। इसी तरह हमारी कोई गलियाँ हों, जानबूझ कर या अनजाने में हुई हों, तंद्रावस्था (आधी नींद) में हुई हों, उसे नज़रअंदाज़ करके हमें सुचारू रूप से चलने का बल, शक्ति, सुझाव गुरु दें यही आज के दिन की प्रार्थना...

तदोपरांत गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर, पू. राजकुमार शर्माजी एवं पू. मनीष साबूजी ने प.पू. गुरुजी को अक्षरज्योति की बहनों द्वारा बनाया विशिष्ट हार अर्पण किया। तभी पू. मनीष साबूजी पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी ने प्रसादी का यह हार उन्हें पहना दिया।

लुधियाना के पू. दर्शनसिंह भट्टीजी पंजाब के मुक्तों का भाव अर्पण करने विशिष्ट हार लाये थे, सो उनके साथ मिल कर जगरांव के पू. अनुज शर्मा ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। हमेशा की तरह मंदिर के सेवक पू. ओमप्रकाशजी ने अपने हाथों से बनाया मोगरे का हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया और पू. हरिशंकर शर्माजी ने भी हार द्वारा प.पू. गुरुजी के प्रति भाव व्यक्त किया।

इसी प्रकार, प.पू. दीदी को बहनों व भाभियों की ओर से पू. रूपाभाभी जानी एवं दुर्बई निवासी पू. परिमलभाई-पू. सुवास आचार्य की सुपुत्री पू. ऋचा ने हार अर्पण किया। पंजाब की भाभियों की ओर से लुधियाना की पू. रणजीत भट्टीजी और सबद्वी कलां की पू. अंकिता भार्गवजी ने प.पू. दीदी को हार अर्पण किया।

हार विधि के पश्चात् श्री ठाकुरजी की मूर्ति का पूजन करके, संतों, युवकों, हरिभक्तों एवं बच्चों ने प.पू. गुरुजी का पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। बहनों और भाभियों ने भी श्री ठाकुरजी की मूर्ति का पूजन करके प.पू. दीदी का पूजन करते हुए आशीष याचना की और फिर महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

अत्यंत हर्ष की बात है कि इस मंगलकारी दिन पर संतभगवंत साहेबजी तथा सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई की निशा में Los Angeles के अनुपम मिशन मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा संपन्न हुई। इतिहास के पन्नों पर 2 और 3 जुलाई 2023 श्री ठाकुरजी एवं प.पू. गुरुजी की मूर्तिप्रतिष्ठा के दिनांक के रूप में अंकित करके इस बार की गुरुपूर्णिमा अविरमरणीय हो गई! इन अनमोल पलों की स्मृति करते हुए प्रार्थना करें कि हे प्रभु! मूर्ति स्थापना तो सांकेतिक है, परंतु आप हमारे हृदयाकाश में सदैव निवास कर सकें, कृपा करके हमारा तंत्र आप ऐसा बना दीजिये...

14 जुलाई 2023—सुंबर्दी पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर
भक्तवत्सल प.पू. गुरुजी की निशा में पू. दीपक अग्रवाल का जन्मीत्सव...



M U M B A I

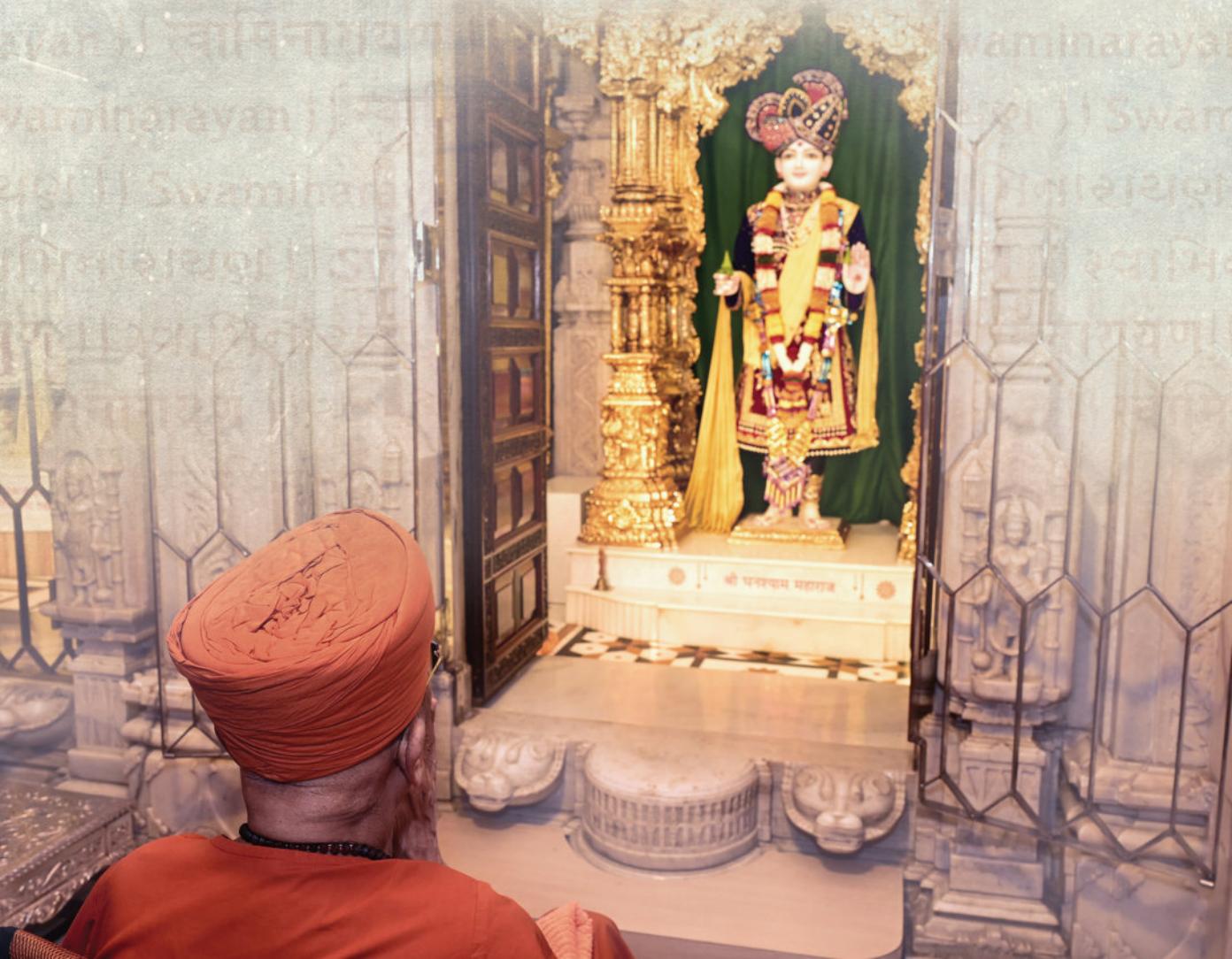
15 जुलाई—यू. सनिल भिण्डे के Cafe 'Sage' और घर को पावन किया...

Sage





16 जुलाई – ऐतिहासिक क्षण... जब 57 वर्ष के यशात् प.पू. गुरुजी
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, दादर - मुंबई के दर्शनार्थ गये!





हिन्दोले में विराजमान
श्रीहरि को छूला कर,
श्री नीलकंठ वर्णी का
जल अभिषेक करके
गुणातीत स्वरूपों की
मूर्तियों का दर्शन....







‘योगी सभा गृह’ – दादर





श्री नीलकंठ वर्णी के जल अभिषेक व हरि मंदिर के दर्शन का बहनों ने लाभ लिया...



M
U
M

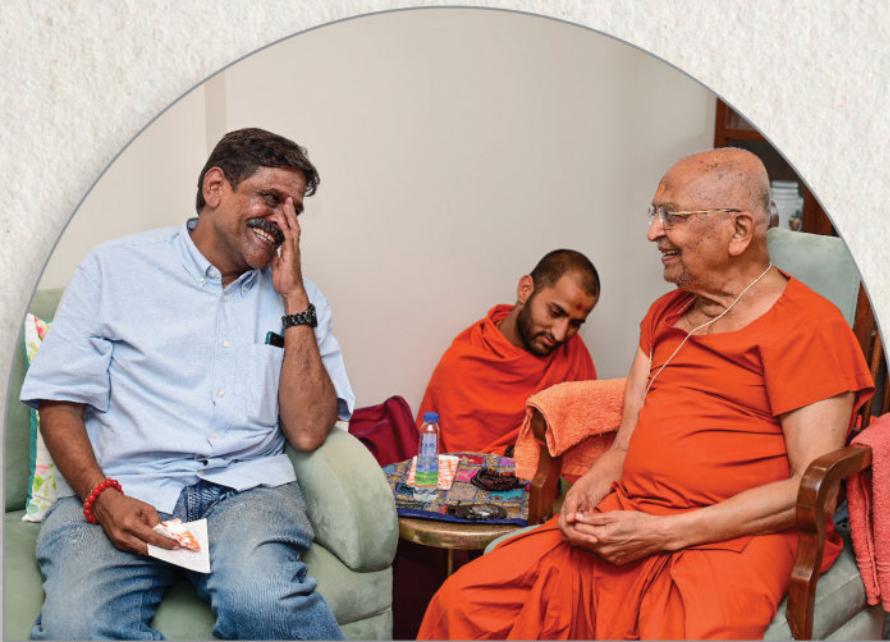
B
A
I



मुंबई के
श्री बाबुलनाथ मंदिर
के दर्शनार्थ...



पू. डॉ. केयुरभाई अध्वर्यु के घर पधरामणी...



LONAVALA



17-18 जुलाई – लोनावला...





LONAVALA

गुरुहरि काकाजी के
प्रासादिक स्थल...

चंद्रलोक रेस्तरां



तुलसी साधना कुटीर



मगनलाल अण्ड सन्स दुकान को यावन किया...

18 जुलाई – यवई मंदिर में हीने वाले नूतन निर्माण निमित्त मंत्र पुष्पांजलि...



पू. अनिलभाई माणेक के घर यधरामणी...

पू. घनश्यामभाई कीठारी एवं उनके समधी पू. अतुलभाई कामदार के घर यादगारी...



पू. मिलनभाई शाह के घर यादगारी...





भक्तवत्सल परम पूज्य गुरुजी का मुंबई-लोनावाला विचरण...

भगवान् स्वामिनारायण के जीवन प्रसंगों में पढ़ा है कि श्रीजी महाराज कई बार मध्यरात्रि को अचानक उठ कर, कभी पैदल तो कभी अपनी माणकी घोड़ी पर सवार होकर निकल जाते थे। बाद में पता चलता कि किसी भक्त की पुकार सुन कर या तेज़ बरसात के कारण किसी के घर के गिरते छप्पर को अपना कंधा लगा कर रक्षा करने वे गये थे। ऐसे प्रसंग सुन या पढ़ कर अंतर गद्गद हो जाता है कि अहो, कैसे करुणानिधान प्रभु ने हमें अपने आश्रय में लिया!! इससे भी अधिक, अपने पवित्र-निर्मल संतों की गोद में बिठा कर हमें निहाल कर दिया और... अपने अखंड धारक संतों के द्वारा वर्तमान समय में भी अपने प्रगटीकरण का वे अनुभव करा रहे हैं।

अबकी बार 14 जुलाई 2023 की तड़के प.पू. गुरुजी ने अपनी आयु और देह-तबियत की तनिक भी परवाह किये बिना भक्तों के प्रति अपने अतिशय वात्सल्य का दर्शन कराया। 13 जुलाई की रात को प.पू. गुरुजी ने सेवकों से बातचीत करते हुए कहा कि कल दीपक अग्रवाल (मुंबई) का जन्मदिन है। तो, क्यों ना surprise में कल वहाँ जायें? फिर ऐसा विचार किया कि कल सुबह तय करेंगे और तकरीबन 11:30 बजे प.पू. गुरुजी आराम में चले गये। करीब डेढ़ बजे प.पू. गुरुजी washroom जाने जगे और एकदम बोले— सुबह की राह क्या देखनी, चलो अभी निकल जाते हैं।

तुरंत ही वहीं सो रहे पू. राकेशभाई को जगाया और मुंबई जाने के लिये पहली फ्लाईट की टिकिट बुक कराने के लिये कहा। 4:00 बजे तो कुछ मुक्तों को साथ लेकर प.पू. गुरुजी airport जाने निकल पड़े और साथ ही साथ पू. सुहृदस्वामीजी के साथ अन्य संतों, सेवकों, कुछ बहनों और हरिभक्तों को भी सुबह 10:00 बजे की फ्लाईट से मुंबई आने के लिये कहा। Airport जाते हुए सेवक पू. अभिषेक को ऐसा हुआ कि अचानक जाना हो रहा है, तो एक बार captain पू. विपिन यादव से बात कर लूँ कि यदि वो airport पर हो, तो प.पू. गुरुजी के लिये wheelchair इत्यादि की सुविधा करा दें। फोन पर बात करने पर पता चला कि अभी ही Flying complete करके वो घर जाने के लिये निकले हैं। लेकिन, तुरंत ही U turn लेकर वापिस airport पहुँच कर उन्होंने सारी सुविधा कराई। धन्यवाद हो उनकी ऐसी सेवा के लिये कि Flying के कारण पूरी रात जगे होने के बावजूद प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने का मौका वे चूके नहीं। सुबह 6:30 की Flight से प.पू. गुरुजी मुंबई के लिये रवाना हुए। मुंबई में सिर्फ पू. अनिलभाई



माणेक के परिवार को बताया था कि इस तरह प.पू. गुरुजी आ रहे हैं। सो, पू. मिलन माणेक अमदावाद के पू. विपुलभाई ठक्कर की पहचान से प.पू. गुरुजी के लिये गाड़ी लेकर airport पहुँच गये थे। करीब 10:00 बजे मुंबई में अंधेरी वेस्ट स्थित पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर पहुँच कर घंटी बजाई। पू. ओ.पी. अग्रवालजी दरवाजा खोलने लगे, लेकिन प.पू. गुरुजी के साथ गये सेवक बाहर से दरवाजे को अपनी ओर खींच रहे थे। मानसून के कारण वहाँ खूब बारिश और तेज़ हवायें चल रही थीं। पू. ओ.पी. अग्रवालजी को ऐसा लगा कि शायद हवा के कारण दरवाजा खुल नहीं रहा। सो, उन्होंने पूरा जोर लगा कर दरवाजा खोला, तो देखा सामने ही प.पू. गुरुजी खड़े थे। स्तब्ध पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने तुरंत ही अपने परिवारजनों को आवाज़ लगाई। एक-एक करके सब वहाँ आये और द्वार पर प.पू. गुरुजी को यूँ अचानक देख कर अवाक़ हो गये। लगातार Happy birthday to Deepak की गूंज से घर का वातावरण दिव्यता से भर गया। पू. दीपक के लिये तो जीवन का यह memorable birthday कहा जाये कि इस आयु में अपनी तबियत और समय को अपनी मुट्ठी में बंद करके प.पू. गुरुजी अपने प्रिय भक्तों को प्रभु की मूर्ति का सुख देने के लिये पहुँच गये। मुक्तों के प्रति प.पू. गुरुजी की भक्ति यहीं तक सीमित नहीं रही। रातभर के जगे होने के बावजूद भी दोपहर तक प.पू. गुरुजी बैठे रहे, क्योंकि पू. सुहृदस्वामीजी के साथ अन्य संत, सेवक, पू. राकेशभाई कुछ मुक्तों के साथ आने वाले थे। दोपहर करीब डेढ़ बजे पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर पहुँच कर, इन सबने एक और surprise दिया। पू. ओ.पी. अग्रवालजी, पू. दीपक एवं परिवार का कैसा सर्मपण होगा कि प.पू. गुरुजी सभी संतों को लेकर गये! यूँ अचानक सबके आने के बाद, पू. डॉली दीदी अपनी पुत्रवधू पू. मानसी के साथ सबके भोजन की व्यवस्था में जुट गई, लेकिन उन्हें अपनी दिव्य बेटी प.पू. आनंदी दीदी की कमी खूब खल रही थी। दोपहर को प्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी थोड़ी देर आराम में गये। इन दिनों प.पू. भरतभाई पॉर्टिस और प.पू. वशीभाई अमेरिका गये हुए थे। सो, सायं पर्वत से पू. राजुभाई ठक्कर, पू. माधुरी बहन व बहनें तथा मुंबई के कुछ स्थानिक हरिभक्त दर्शन हेतु पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर आये। आरती के बाद धुन हुई और फिर 'स्वामी की बातें' पढ़वाते हुए प.पू. गुरुजी ने निम्न आशीर्वाद दिया—

गुणातीतानंदस्वामी ने इतनी सारी बातें करी हैं कि सारा ब्रह्मांड भर जाये। योगीजी महाराज कहते थे कि गुणातीतानंदस्वामी ने इंद्रियों-अंतःकरण के भावों को देख कर बातें करी हैं। मानो हमारी इंद्रियाँ और अंतःकरण कहाँ तक सोच सकते हैं, उसके अंत तक को सोच कर स्वामी ने बातें करी हैं। जब बातें सुनेंगे या पढ़ेंगे तो लगेगा कि स्वामी हमारे लिये ही बातें कर रहे हैं और जो ऐसे लेगा, इस बात पर गौर करेगा और जीवन में उतारने की कोशिश करेगा, तो स्वामी



उसका ऐसा कलेवर बदल देंगे कि वो बातें उसके जीवन की शैली बन जायेंगी।

* भगवान और साधु की महिमा की बातें निरंतर कहनी और सुननी। हम बातें करते हैं, लेकिन लगातार महिमा की बातें नहीं होती। कई बार ऐसा हो जाता है कि इस भगत ने ऐसा किया, पर ये ठीक नहीं था। भगवान और संत की महिमा की बातें साधु के लिये भी लागू होती है, क्योंकि कई बार मन में ऐसा हो जाता है कि स्वामी को यह ठीक से आता नहीं है। इसलिये गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि कुछ भी हो, **भगवान और साधु की महिमा की बातें निरंतर यानि continuously करनी। निरंतर का दूसरा अर्थ यह कि तनिक भी अंतराय रखे बिना दिल खोल कर करनी।** केवल बाह्य तौर पर नहीं कि हम स्वामी का बच्चान करेंगे, तो हमारे प्रति सबका अच्छा अभिप्राय होगा, ऐसी भावना से नहीं। दिल की सच्चाई से महिमा गाओ...

सहजानंदस्वामी-स्वामिनारायण भगवान अपना समग्र ऐश्वर्य लेकर आये हैं। ऐसा नहीं कि ऊपर अक्षरधाम में जो महाराज हैं, इनके पास कुछ ज्यादा रह गया। पूरा का पूरा ऐश्वर्य यहीं लेकर आये हुए हैं। अक्षरधाम यानि गुणातीतानंदस्वामी जो अक्षररूप हैं, इनके अंदर महाराज अखंड निवास करके रहते हैं। अब ऊपर जाकर नया अक्षरधाम देखना नहीं है। अखंड भगवान रखे हुए गुणातीत संत का संबंध हुआ, वो हमें अक्षरधाम मिला कहा जाये। सामान्यतः स्वर्ग को अक्षरधाम कहते हैं, लेकिन यह तो स्वर्ग से खूब परे है। वह अक्षरधाम ऊपर नहीं देखना, वह तो ये स्वामी जो हमें प्रगट मिले वही अक्षरधाम है। इनके संबंध से हम अक्षरभाव को पाकर अक्षररूप बन जायेंगे। लेकिन, उनके साथ निरंतर-अंतरायरहित का संबंध करना चाहिये। हम यहाँ ओ.पी. के यहाँ आते हैं, तो मुंबई के सब भक्त इकट्ठे होते हैं। लेकिन संत ना भी आये हों, पर रोज़ सुबह दस मिनिट और शाम को दस मिनिट में तो कोई ज्यादा फर्क़ पड़ता नहीं। लेकिन हम यह भी नहीं कर पाते। ग्राम्यवार्ता करने में कितने घंटे चले जाते हैं! धुन करने के समय घड़ी देखते रहते हैं। काकाजी पंद्रह मिनिट की धुन कह कर घंटों तक धुन करते थे, सब घड़ी देखते रहते हैं। उसका कारण यह है कि हमें उसमें मज़ा नहीं आता। जबकि ग्राम्यवार्ता और दूसरों की टीका-चर्चा करनी हो, तो वो घंटों तक करते रहेंगे। इसमें कितना टाइम चला जायेगा वो भी पता नहीं चलेगा।

* महाराज अपना सारा ऐश्वर्य-प्रताप, रिद्धि-सिद्धि सब लेकर नीचे आये हैं, कोई शक्ति ऊपर रख कर आये हैं, ऐसा नहीं है। अपना पूरा साज लेकर यहाँ नीचे आये हुए हैं। बस हमें ये बात समझ कर जहाँ हमें ऐसी प्रतीति हो कि इन्होंने महाराज रखे हुए हैं, ऐसे संत



के साथ जुड़ जाना चाहिये। ऊपर जाकर कुछ देखना-करना बाकी नहीं रहा है... धरती पर जो ऐसे पवित्र साधु मिले हैं; वे ही भगवान की मूर्ति हैं, ये अगर भीतर में मान लिया जाये, तो अपूर्णता और कल्पना टल जायेगी, *contentment* (संतुष्टि) *feel* होगी। देहभाव टलता है, तो ब्रह्मभाव प्रगट हो जाता है। वो ब्रह्म हमें *personified*-मूर्तिमान मिले हैं। वे जैसे हैं वैसे हमें अभी-फिलहाल मिले हैं। अंतकाल में ऊपर जाकर देखना है, ऐसा कुछ भी बाकी नहीं है। गुणातीतानंदस्वामी ने स्वयं इतनी स्पष्टता से बातें करी हैं। यदि ये बात अपने जीव में नहीं बैठी होगी, तो मायूसी-निर्बलता रहेगी। सोचते रहेंगे कि ये जीवन कैसे गुज़रेगा? ऐसा ही कब तक चलता रहेगा? मरने के बाद हमारी क्या गति होगी? उसके बजाय एक *fulfilment* रहेगी कि महाराज ने जो दिया हुआ है, वो हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ है, ऐसा संतोष भीतर में हमेशा ही रहा करेगा। अगर ये बात समझ में आई कि देह छोड़ कर जिन्हें पाना है, वे हमें अभी इसी जन्म-जीवन में मिल गये हैं, तो कभी भी मायूसी लगेगी नहीं, हायतौबा होगी नहीं, लाचारी रहेगी नहीं, जीवभाव नहीं रहेगा और ब्रह्मभाव प्रगट हो जायेगा। जीव ब्रह्मलय-ब्रह्मस्वलय हो जायेगा। ये महिमा समझने जैसा और कोई साधन नहीं है। त्याग, व्रत या तीर्थाटन कुछ भी किया करो, उसके बजाय ये एक समझ पक्की रखें कि हमें अद्वारधाम में मूर्तिमान विराजमान प्रभु देखने नहीं हैं, वे हमें यहाँ मिल गये हैं। फिर उन्हें ढूँढने के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। वर्ण कितना ही साधन करो, लेकिन जीव में कौवत नहीं आयेगा। **कौवत मेरे लिये प्रसादी का शब्द है।** मेरा शरीर एकदम पतला था, तो मुझे मन में ऐसा हुआ कि कुछ व्यायाम वगैरह करके *body* बनायें। यहाँ मुंबई में मरीन ड्राइव पर कैवल्यधाम *institution* था। **मेरी एक सिसिटम थी कि जो भी करना, वो बापा को पूछ कर करना है।** बापा तब कपोलवाड़ी में आये हुए थे। मैं बापा से पूछने गया कि कैवल्यधाम *join* कर लूँ? तो बापा ने पूछा कि क्यों करना है? मैंने कहा कि बापा, शरीर अच्छा हो जायेगा। उन्होंने कहा कि रोज़ (त्रीजा भोयंवाळा) मंदिर जाकर सौ दंडवत् करना। इससे शरीर में कौवत आयेगा...

- * **महिमा समझे बिना अपने मनमाने ढंग से कितने ही साधन करेंगे, जीव बल को नहीं पायेगा।** पर, संत की आज्ञा से एक साधन करेंगे, तो बेड़ा पार होगा। संत कितने बड़े हैं ऐसा समझे हुए, उन्हें आत्मसात करे हुए भगवदी के प्रसंग से महिमा आयेगी। बड़े संत का प्रसंग किये हुए भक्तों की संगत से महिमा जीव में भरती है। **काकाजी ने योगीजी महाराज को यथार्थ जाना,** तो उनके संबंध से बापा की महिमा समझ आई। बापा को अपने आप समझना कठिन था। हाँ, सब ये ज़रूर मानते थे कि सीधे-साधे, भले साधु हैं, पर वे तो



भगवान का स्वरूप हैं, इनमें और भगवान में रंचमात्र फर्क नहीं है, ऐसा नहीं मानते थे। ये ज्ञान काकाजी ने सारे समाज में उजागर किया। जिस सत्संग की सब बातें करते हैं, वो ये हैं कि ऐसे संत की महिमा से हम भरे रहें। ऐसा करेंगे, तो बाकी की बातें धीरे-धीरे हमें समझ में आयेंगी और उसके मुताबिक हमारा कलेवर भी बदलेगा।

✿ **सांख्य विचार यानि**—जगत झूठा है ऐसी समझ होना सांख्य है। जगत में सब बेकार है ये समझ कर जो आत्मा में रहे, वो सांख्य। ये रखेंगे तो जगत की चीजें हमें परेशान नहीं करेंगी।

योग यानि—ओहो! भगवान के भक्तों की संगत में रहना है। ऐसे साधु के साथ जुड़ जाना है, ऐसा जो माने वो योग। भगवान, संत और भगत ही सच्चे हैं, वे ही हमारे सच्चे सगे हैं। यूं मानकर जो चलेंगे वे सुखी रहेंगे। उन्हें काल, कर्म और माया भी परेशान नहीं कर पायेंगे। ये आजमाने जैसी बात है। हम भगवान, संत और सत्संगी को मानें, यही एक सत्य है। बाकी तो ठीक है, जगत में आये हैं तो एक व्यवहार करना पड़ता है। लेकिन इसे सच्चाई नहीं मानेंगे, तो जगत के सारे द्वंद्वों से हम परे हो जायेंगे। वह कब-कैसे होगा, वो हमें ख्याल भी नहीं पड़ेगा। जिसे सुखी रहना हो, उसे इन चीजों से attachment नहीं रखनी चाहिये।

हम भगवान का चिंतन करते हैं, पर अंतर से भजन नहीं कर पाते होंगे। कोई भजन भी करता होगा, लेकिन उस समय मन कहीं इधर-उधर भटकता होगा। सो, स्वामी ने कहा कि जीभ से मेरा (प्रभु) भजन करो और मन में मेरी (प्रभु) मूर्ति को याद करो। मानो उनका सिमरन या इनकी स्मृति में रहना कि स्वामी ऐसे बैठे थे, ऐसे आशीर्वद दिये थे। ये आंखों के सामने तादृश होना चाहिये। कपोलवाड़ी में ये बात पढ़ते हुए बापा कहते थे कि स्वामी ने कहा कि प्रभु 6 महीने में वश हो जायें, लेकिन अब तो 6 घंटे में वश हो जायेंगे, अभी भगवान इतने गरजू बने हैं... सो, भगवान को राजी करने का सर्वोपरि उपाय सीखना।

भगवान का बड़प्पन यानि महिमा कि ओहोहो! भगवान की कैसी सत्ता? कैसा सामर्थ्य? कैसा विराट स्वरूप इनका? कैसे कर्ता? पल में चाहे सो करे, वो भगवान। हम यह बोलते हैं, लेकिन मानते नहीं हैं। यह जो माने, उसका काम अपने आप होता रहे। मानो किसी भी तरह की आपदा आ पड़े, विपरीत संयोग बन जायें, पर वो भीतर से दूट नहीं जायेगा। यदि देह में कोई रोग-बीमारी आ जाये और कोई कह दे कि तुम्हें तो केंसर है, तो वो डरेगा नहीं। उसे ऐसा होगा कि मेरे स्वामी जैसा चाहेंगे, वो ही मेरा होगा। इसे निष्ठा बोला जाता है कि मेरे प्रभु सर्वशक्तिमान हैं, हम भजन करते रहेंगे तो कोई आंच आने नहीं देंगे। जिसे



प्रभु पर विश्वास हो, वो ऐसा माने कि भगवान मरजी के बिना पता भी नहीं हिलता। भले ही कोई ताक़तवर व्यक्ति हो या कोई शक्ति हो, लेकिन भगवान की मरजी के बिना वो कुछ कर नहीं पायेगा। जिसे ऐसा आसरा, ऐसी समझ या ऐसा संबंध न हो और भगवान की ऐसी महिमा न समझता हो, तो जब कोई विपरीत संयोग आ जाये, तो उसे ऐसा हो जाये कि हाय-हाय कब मेरा अच्छा होगा, कब मेरा काम होगा? ऐसा सिलसिला चलता रहेगा और फिर सत्संग से दूर होते जायेंगे...

सभा के बाद सभी ने प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी एवं दिल्ली से गये सभी मुक्त पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर व अन्य जिस जगह पर ठहरने की व्यवस्था की थी, वहाँ रात को रुके।

1997 में जब मुंबई के लीलावती अस्पताल में प.पू. गुरुजी की बायपास सर्जरी हुई थी, तब इस अस्पताल के नजदीक पू. प्रमीतभाई संघवी की धर्मपत्नी पू. वर्षा संघवी के भाई पू. अनिलभाई भिण्डे व भाभी पू. कश्मीरा भाभी रहते थे। दिल्ली मंदिर व प.पू. गुरुजी से उनका कोई परिचय नहीं था, लेकिन पू. वर्षा भाभी के कहने पर उस समय पू. कश्मीरा भाभी ने पू. दीक्षा दीदी के साथ मिल कर प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों के लिये भोजन बनाने की जो सेवा करी, उसके फलस्वरूप प्रभु ने उनके जीव में सत्संग खूब गहराई से पक्का करा दिया और... आज पूरा परिवार मंदिर से आत्मीयता से जुड़ा हुआ है। उनके बेटे पू. सनिल ने इसी साल जनवरी से कांदिवली इट में Sage Cafe खोला है। उनकी बहुत इच्छा थी कि प.पू. गुरुजी Sage Cafe में पधरामणी करें। सो, 15 जुलाई की सुबह नाश्ता करने के बाद प.पू. गुरुजी एवं सभी वहाँ गये। भिण्डे परिवार एवं पू. सनिल की मंगेतर पू. शिवांगी ने अपने परिवारजनों के साथ प.पू. गुरुजी का स्वागत किया। सबके बैठने की बहुत अच्छी व्यवस्था की थी। पू. सनिल ने स्वयं Cafe के साथियों के साथ सारे व्यंजन बना कर, प.पू. गुरुजी व सबको खिलाये। रिमझिम बारिश के मौसम में सब आनंद कर रहे थे कि तभी प.पू. दीदी कुछ बहनों के साथ surprise में वहाँ पहुँची। उपस्थित सभी मुक्त आनंदित हो गये और पू. डॉली दीदी की खुशी का तो कोई ठिकाना न रहा... यहाँ धुन करके प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी व सभी पू. अनिलभाई भिण्डे के घर गये और वहाँ धुन-भजन करके पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर गये। सारे दिन के थके होने के बावजूद भी प.पू. गुरुजी आराम में नहीं गये और सायं आरती-धुन के बाद 'स्वामी की बातें' पढ़वाते हुए आशीर्दन दिया—

✿ खेत में पाइप लगा कर पानी देंगे, तो कितना अनाज उगेगा? पर, यदि बरसात हो जाये तो काफ़ी उपज हो जायेगी। फिर वो एकदम ख्रतम नहीं होगा। इसी प्रकार, जीव के दोष



भगवान् और संत की दृष्टि से जैसे टलते हैं, वैसे तप, व्रत, दान जैसे साधनों से नहीं टल पायेंगे। योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी की कृपा के कारण हम सब खुशनसीब हैं, मगर कृपा आत्मसात् करना आना चाहिए। मन में प्रश्न उठता है कि कृपा आत्मसात् करने के लिये क्या करना चाहिए? संत की मरजी में रहेंगे, तो वे कृपा करेंगे। साथ ही उनके भक्तों को निर्देष मान कर, निर्देषबुद्धि से सेवा किया करेंगे, तो महाराज कृपा करेंगे।

* प्राप्ति से कैसा कल्याण होता है? तो जैसे पूरी पृथ्वी पर वर्षा बरसती है और अनाज पकता है। फिर उसे ढोर, पंछी खाये या चोर ले जाये, फिर भी कम नहीं पड़ेगा। झरने और तालाब सूख जाते हैं, पर समुद्र का पानी कभी कम नहीं होता। लेकिन, समुद्र का पानी पी नहीं सकते। ऐसे ही ये सत्संग दुर्लभ है, हर किसी को मिल नहीं सकता... बाहर की जनसंख्या तो कितनी सारी है, पर हम कितने भाग्यशाली कि बापा की दृष्टि में आ गये, उनका जोग हो गया और... बापा ने हमें काका की निशा दी और पप्पाजी, स्वामीजी का जोग मिल गया। दरअसल हम विचार नहीं करते कि हमने ऐसे तो क्या ही साधन किये हैं कि बापा हम पर दिल खोल कर इतना बरसे और... विपरीत संयोग भी बाधारूप नहीं बनते, बड़े पुरुष रक्षा करते हैं।

* साधु खुद धर्म में रहते हैं। उन्हें स्वरूप का ज्ञान होता है और वैरागी होते हैं, वे जगत् में चिंचे नहीं जाते।

* निर्देषबुद्धि यानि—भगवान् के भक्तों की माहात्म्यवत् सेवा करने की तान हो। बापा के लिये कहते थे कि उन्हें हरिभक्तों की सेवा करने में ही आनंद आता था। सेवा ना मिले तो वे मायूस-उदास हो जाते थे। उन्हें ऐसा होता था कि अरे! आज कोई भक्त नहीं आया। वे जब गोड़ल मंदिर रहते थे, तो कीर्ति एक्सप्रेस ट्रेन से भक्त वहाँ आते थे। यदि किसी दिन कोई भक्त ना आया हो, तो वे उदास हो जाते कि आज कोई भी नहीं आया। जबकि हमारा कैसा है कि अगर कोई आता है, तो हम सोचेंगे कि कहाँ से चले आते हैं? ये तो साधु के लिये बात हुई। पर हमारे यहाँ तो काकाजी ने ऐसे भक्त तैयार किये कि भक्तों को देख कर खुश हो जाते हैं। कल से सरप्राइज़ में सबके आने की शुरुआत हुई है। पहले 9 आये फिर और 2 आये, फिर 14 और फिर 5 आये, ओ.पी. अग्रवाल तो सबको देख कर खुश होते हैं और सबके रहने की बढ़िया स्टेटिंग कर रहे हैं... ये महिमा सहित उपासना कही जाये। धाम धामी और मुक्तों, भगवान् के भक्तों का माहात्म्य समझना। पहले चिदाकाश हाँल में अद्वितीय पुरुषोत्तम की मूर्ति थी। फिर साहेबजी के यहाँ मैंने देखा कि उन्होंने तो धाम, धामी



और मुक्तों की मूर्तियाँ पथराई हैं। इसलिये हमने भी वैसा सेट किया। महाराज के समय ऐसे मुक्त नहीं थे, ऐसी बात नहीं है। भगतजी, जागास्वामी, अदाश्री ऐसे ही मुक्त थे। लेकिन तत्कालीन समाज उन्हें मान्यता देने के लिये तैयार नहीं था। आज तो काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी के वचन पर पूरा समाज एक आत्मबुद्धि से जुड़ता गया है।

- ✿ एकदेशीय साधु का सेवन न करके, सर्वदेशीय साधु का सेवन करो। जिनमें लौकिक व्यवहार मार्ग, आध्यात्मिक मार्ग, सबका हुन्नर हो। महाराज की खूब कृपा बोली जाये कि काकाजी मिल गये। व्यवहार, कैसी भी उपासना या शास्त्रार्थ का ज्ञान सीखना हो, काकाजी के पास सब मिल ही जाये। हमें कृपा, दया, अनुग्रह जैसे सब शब्द एक सरीखे लगते हैं। पर, काका उसका भेद समझाते कि कृपा सूर्य के समान सब पर होती है। दया सब पर होती है, पर आशीर्वाद तो जो प्रभु व संत का होकर रहता हो; उनकी मरणी में जीता हो, जिसे निष्ठा हो उस पर अनुग्रह होता है... सो, जिसके जीवन में संत का प्राधान्य हो, ऐसे साधु का योग करना। संग शब्द के लिये बापा एक बार बोले थे कि दूसरे प्रकरण की एक बात के अंदर 22 बार संग शब्द का प्रयोग हुआ है। संग की कितनी प्रधानता होगी? उस बात को पढ़ कर, अंडरलाइन करते गये तो ठीक 22 बार संग आया। तब ऐसा हुआ कि हम भी पढ़ते हैं और बापा ने भी पढ़ी होगी। पर, उनमें और हम में कितना फँकँ पढ़ जाता है।
- ✿ इंद्रियाँराम को सब कुछ चाहिये होता है। इसीलिये विषयों के पीछे लगे ही रहते हैं और दूसरों की खुशामद करते रहते हैं। जबकि आत्माराम को तो भगवान के अलावा कुछ चाहिये ही नहीं। आत्मा को तो परमात्मा की ही भूख होती है...
- ✿ देह-मन की हर प्रकार की वासना की पहचान रखनी पड़ती है कि मुझे अगर ये चीज़ आड़े आयेगी, तो सत्संग में जमेगा नहीं और फिर बापा के प्रति भी मनुष्यभाव आ जायेगा। इसलिये यह तैयारी रखनी पड़े कि ऐसी गङ्गबङ्ग कभी हो जाये, तो भी मुरझाऊं नहीं। वासना ठालने का सबसे सरल उपाय समूह में रहना है। ये रमेशभाई त्रिवेदी दो दिन से ओ.पी. के घर हमारे साथ लक रहे हैं, इनका ऐसा प्यार है और... इन्हें ख्याल है कि किसी के खराटे सुन कर उन्हें नींद नहीं आयेगी और फिर घर जाने का मन होगा। लेकिन, वे भजन करके लङ्घाई लेते हैं कि भले किसी के खराटे की आवाज़ आती रहे, लेकिन जैसे गुरुजी टी.वी. पर विडियो गेझर खेलते बच्चों के शोर में भी आराम से सो जाते हैं, ऐसे ही उन्हें भी सो जाना है। ये तो संत लगाव करवा कर जीव को सिखाते हैं, वर्ना इंद्रियाँ-अंतःकरण तो कुसंगी हैं!



ऐसा हो जाये कि खरटि की आवाज़ में तो सो नहीं पायेंगे। पर, लगाव होगा तो सोचेंगे कि भले नींद पूरी नहीं होगी, तो सुबह घर जाकर सो जायेंगे।

* ...अगर मनमुखी वर्तन हुआ हो, तो अंदर बेचेनी हुआ करे और संत राजी ना हों, तो अंदर जलन हुआ करे। स्वामी की एक बात है कि जो छोटे हों, उन्हें बड़ों को पूछ कर करना और जो बड़े हों, उन्हें महाराज व गुरु की प्रेरणा के मुताबिक़ करना चाहिये। पप्पाजी ने मुझे बहुत स्पष्ट कहा था कि मैं (पप्पाजी) भी अगर कहूँ, तो भी तुम्हें काकाजी की मरजी के मुताबिक़ ही वर्तना है। काकाजी धाम में गये, हम तो उनका ध्यान और स्मृति करते थे। पर, मन तो यह भी कहता कि हमारी तो प्रगट की उपासना है। अगर काकाजी का ध्यान करेंगे, तो प्रगट की बात नहीं कही जायेगी। सो, पप्पाजी से मैंने पूछा कि मुझे किसका ध्यान करना चाहिये? उन्होंने कहा—देख, तुझे काका का ही ध्यान करना है। यहाँ तक बोले कि मेरा या हरिप्रसादस्वामी का भी नहीं। मैंने कहा कि पप्पा, अपनी तो प्रगट की उपासना है? तो बोले कि प्रगट के ज्ञान को तू ज्यादा समझता है कि मैं? जो प्रगट स्वरूप हो, वो कोई हमेशा ही हमारे साथ ही रहे ऐसा नहीं होता। उनके साथ एक बार ठीक से जुड़ जाना चाहिए, फिर उन्हें याद करते रहना। हमारा ज्ञान बहुत गहरा है...

सभा के बाद प्रसाद लेकर देर रात को आराम में गये।

16 जुलाई की सुबह नाश्ता करके करीब साढ़े दस बजे, प.पू. गुरुजी सबको लेकर **दादर ईस्ट** में स्थित **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण** के दर्शन हेतु निकले। आज का दिन गुणातीत समाज के इतिहास में सुनहरे अक्षरों से अंकित होने जा रहा था; क्योंकि यह वही मंदिर था जहाँ से 1966 की 28 जून को गुरुहरि योगीजी महाराज की दिव्य कल्याणकारी योजना के अंतर्गत, गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी एवं ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की निशा में 39 संतों ने नूतन समाज गढ़ने के लिये प्रस्थान किया था। करीब साढ़े ज्यारह बजे दादर मंदिर पहुँचे। पू. भावेशभाई रावल और साधु पू. मननदास ने सारी व्यवस्था कराई थी। वहाँ पू. अभयस्वामीजी एवं पू. सर्वेश्वरस्वामीजी ने आदरभाव से प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामीजी एवं संतों को श्री ठाकुरजी के नज़दीक से दर्शन करवाये। 1960-61 में दीक्षा लेने के बाद, मई 1966 तक प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामीजी के सान्निध्य में प.पू. गुरुजी जिस 'अक्षरभुवन' में रहे, उसके हॉल में गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा स्थापित श्री ठाकुरजी का दर्शन करके प.पू. गुरुजी गदगद हो गये। मानो करीब 60 साल पहले यहाँ गुज़ारे हुए पल ईदम हो आये। साधु होने के बाद यहाँ से तो गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी के मार्गदर्शन में उन्होंने अध्यात्म पथ की शुरुआत की थी। सच, **16 जुलाई 2023** का यह दिन बहुत ही ऐतिहासिक कहा जाये!



यहाँ श्री नीलकंठ वर्णी की मूर्ति का जल अभिषेक, गुरुहरि योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज, प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज की मूर्ति, उनकी प्रासादिक वस्तुओं एवं 'योगी सभागृह' का दर्शन करके, प.पू. गुरुजी एवं सभी माहिम स्थित D.G. Ruparel College of Arts Science and Commerce गये। प.पू. गुरुजी ने एक वर्ष इस College से पढ़ाई की थी। यहाँ से Nepean Sea Road पर रहते हरिभक्त पू. डॉ. केयुरभाई अध्यर्यु के घर पथरामणी के लिये गये। पू. नंदिनी बहन - पू. दीप्ति बहन अध्यर्यु, पू. सोहिणी बहन - पू. राजश्री बहन शाह, पू. अनुपमा बहन - पू. पारुल व्यास एवं मुक्तों द्वारा भाव से बनाये विभिन्न व्यंजनों से श्री ठाकुरजी का थाल करके, सभी ने प्रसाद लिया। भोजन के बाद प.पू. गुरुजी ने आराम नहीं किया और वहाँ से नज़दीक बहुप्रचलित 'बाबुलनाथ मंदिर' का दर्शन करने गये। यहाँ शिवलिंग का अभिषेक किया और फिर नरिमन पाईन्ट, चौपाटी होते हुए पुनः पू. डॉ. केयुर के घर पहुँचे। गुरुहरि काकाजी ने अपने जीवनकाल दौरान मुंबई के नज़दीक के लोनावला में स्थित 'तुलसी साधना कुटीर' में कई बार सत्संग शिविर की थी। 14 जुलाई को प.पू. गुरुजी जब पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर पहुँचे, तभी प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी के इस प्रासादिक स्थल का दर्शन करने जाने की इच्छा बताई थी। सो, 16 जुलाई की दोपहर को पू. मिलन माणेक एवं सेवक पू. अभिषेक खंडाला - लोनावला गये और वहाँ अगले दिन 17 जुलाई के लिये प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों के रहने-खाने इत्यादि की व्यवस्था करके पू. डॉ. केयुर के घर आये। प्रसाद लेकर रात को सब पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर गये।

17 जुलाई की सुबह नाश्ता करके ज्यारह बजे पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर से प.पू. गुरुजी और उनके साथ दिल्ली से आये मुक्त लोनावला के लिये रवाना हुए। मुंबई के स्थानिक हरिभक्त भी साथ में आये। रास्ते में चारों ओर हरियाली से आच्छादित पहाड़ियों में से गिरते झारनों एवं प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए दोपहर करीब 1:30 बजे खंडाला के Tiara Sky Villas के नज़दीक बने बड़े बंगले में पहुँचे। सबने यहाँ दोपहर को प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी, संतगण, सेवक और कुछ हरिभक्त रात को इसी बंगले में ठहरने वाले थे। अन्य मुक्तों की ठहरने की व्यवस्था Tiara Sky Villas में थी। खूब बारिश के कारण चारों ओर हरियाली थी और तेज़ हवायें चलने से ठंडक थी। वातावरण अत्यंत शांतिमय था। सायं प.पू. गुरुजी की निशा में धुन - भजन करके सबने प्रसाद लिया।

18 जुलाई की सुबह प.पू. गुरुजी की पूजा का लाभ लेकर और नाश्ता करके करीब साढ़े बारह बजे गुरुहरि काकाजी की प्रसादी के रेस्तरां 'चंद्रलोक' में दोपहर को श्री ठाकुरजी का



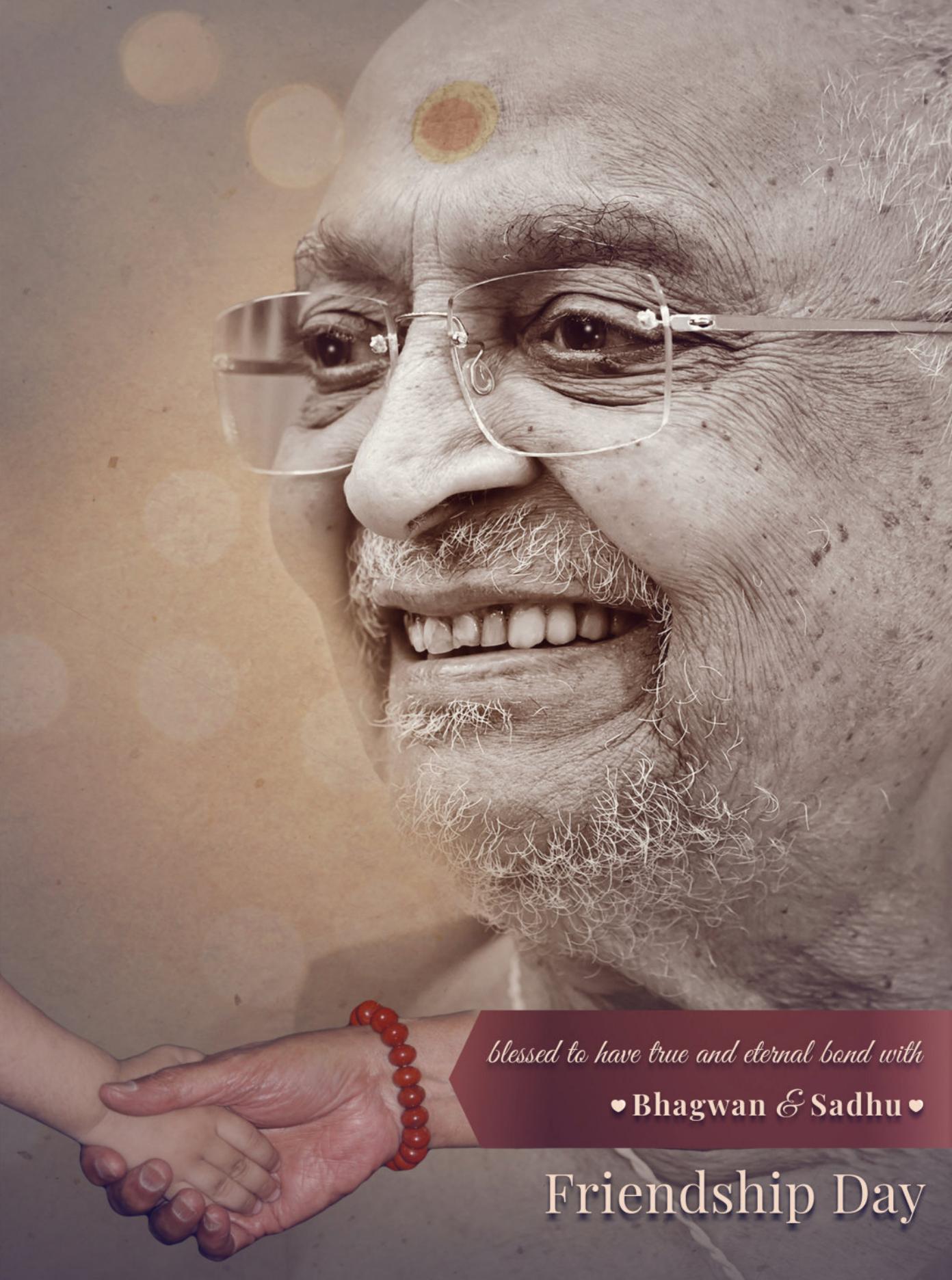
थाल करने गये। वहाँ मालिक श्री अनीषभाई किशोरभाई गणान्ना खवयं उपस्थित थे और भावपूर्ण हृदय से उन्होंने सबको भोजन कराया। श्री अनीषभाई के संपर्क से प.पू. गुरुजी वहाँ के प्रसिद्ध 'मगनलाल चिककी' की दुकान पर गये। यहाँ के मालिक श्री अनंत अग्रवालजी ने भी प.पू. गुरुजी एवं संतों का सम्मान किया। यहाँ धुन करके, चिककी का प्रसाद लेकर गुरुहरि काकाजी के प्रासादिक स्थल 'तुलसी साधना कुटीर' का दर्शन करने गये। प.पू. दीदी ने गुरुहरि काकाजी के साथ की यहाँ की स्मृति करते हुए बताया कि गुरुहरि काकाजी ने यहीं उन्हें आनंदी नाम दिया और कहा था कि भागवती दीक्षा के समय सहजानंदी नाम देंगे। गुरुहरि काकाजी के सान्निध्य में बिताये वे पल प.पू. दीदी के लिये तादृश हो गये और... स्थान देख कर गुरुहरि काकाजी को याद करके दिल भी नतमस्तक हो रहा था कि हमारे प्रभु हमारे लिये कितने सख्ते बन कर एक सामान्य व्यक्ति की भाँति जीवन जीकर गये।

लोनावला से सायं 6:00 बजे निकल कर करीब 8:00 बजे मुंबई-घाटकोपर (ईस्ट) स्थित पू. अनिलभाई माणेक के घर पहुँचे। एक रात पहले ही पैरिस से लौटे प.पू. भरतभाई, पू. राजुभाई, पू. माधुरी बहन व सेवकों-बहनों के साथ पवई से यहाँ प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ आये। पवई मंदिर में होने वाले नूतन निर्माण हेतु प.पू. भरतभाई की आंतरिक इच्छा थी कि प.पू. गुरुजी एक बार प्रसादी के पुष्पों की वर्षा कर जायें। सो, प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई व सभी पवई मंदिर गये। यहाँ गाड़ी में बैठे-बैठे प.पू. गुरुजी ने गुलाब के पुष्पों को हाथ लगा कर धुन करी और फिर पू. सुहृदस्वामीजी एवं संतों ने उन पुष्पों से भूमि का पूजन किया। यहाँ से पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर आने के बाद प.पू. गुरुजी देर रात्रि तक मूर्ति का सुख देने के लिये बैठे रहे कि क्या सोना? कल तो दिल्ली लौट जाना है। यूँ काफ़ी देर के बाद आराम में गये।

19 जुलाई की सुबह पूजा के बाद नाश्ता करके करीब ज्यारह बजे प.पू. गुरुजी कांदिवली के लिये रवाना हुए। कांदिवली में प.पू. महेन्द्र बापु के भतीजे पू. मिलनभाई शाह, पवई मंदिर से जुड़े पुराने जोणी पू. घनश्यामभाई कोठारी और इनकी सुपुत्री पू. बीना के ससुराल पू. अतुलभाई कामदार तथा दिल्ली के पू. अनुभाई महेता के दामाद पू. पंकजभाई मोदी के घर पथरामनी करते हुए प.पू. गुरुजी व सभी airport गये। यहाँ से सायं 6:30 बजे Flight से रवाना होकर रात को करीब 9:00 बजे दिल्ली लौटे। प.पू. गुरुजी द्वारा अचानक मिली दिव्य स्मृतियों से मुंबई के मुक्तों की आत्मा की बैटरी चार्ज हो गई और दिल्ली से साथ गये मुक्तों ने प.पू. गुरुजी की भक्तवत्सलता का अनुभव किया।

5 अगस्त 2023—यहांडों की रानी मसूरी में 'ब्रह्मविद्या शिविर' का आरंभ...





blessed to have true and eternal bond with

• Bhagwan & Sadhu •

Friendship Day

6 अगस्त — Friendship Day

मेरी जिंदगी संवारी
मुझको गले लगा के
बैठा दिया फलक थे
मुझे खाक से उठा के...



प.यू. गुरुजी ने हमसे मैत्री दृढ़ करके मैत्रीभाव के मार्ग पर अग्रसर किया है...



प्रगट प्रभु के सान्निध्य से Musical Chair Game



मुक्ती द्वारा पू. गौरव गर्जी का उनके अपने Resort में स्वागत...



अब यह होटल मेरे से ज्यादा आपका है गुरुजी! — पू. गौरव गर्जी

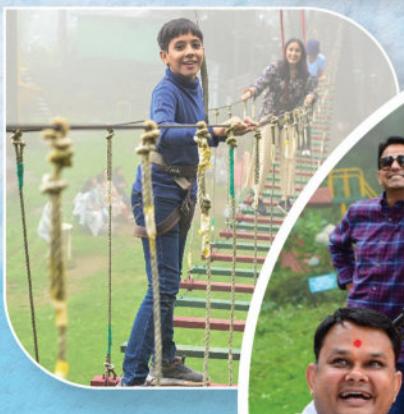
संध्या आरती, धुन-सभा एवं आनंदोद्घात्म...



7 अगस्त – ईको पार्क धनोलटी (अम्बर) की स्मृतियाँ...



खेल गतिविधियाँ...



सत्संग शिविर की सेवायें सुहृदभाव से जीना सिखाती हैं...



य.पू. गुरुजी के साथ की एक भी याल ऐसी नहीं कि वे आनंद ना करते हैं...



प.पू. गुरुजी के पास जीवन जीने की कला है...



भक्तों के प्रति य.पू. गुरुजी
के
अनहृद प्रेम की
कोई सीमा नहीं...



8 अगस्त – पू. गौरव गर्गजी एवं उनके Staff को स्मृति भेंट...





य.पू. गुरुजी के सान्निध्य में मुक्तों का जन्मोत्सव...





मसूरी में ब्रह्मविद्या शिविर 2023

पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार जैसे मई महीने के दूसरे रविवार को Mother's day मनाया जाता है, वैसे ही जून महीने के तीसरे रविवार को Father's day मनाया जाता है। अबकी बार 18 June 2023 को यह दिन आया। दिल्ली मंदिर से जुड़े आश्रितों के लिये गुरुहरि काकाजी की देन प.पू. गुरुजी दिव्य पिता तुल्य हैं। सो, इस दिन सायं कर्व मुक्त श्री ठाकुरजी एवं प.पू. गुरुजी का दर्शन करने आये। पू. गौरव गर्जनी भी दर्शन करने आये थे। तब उनसे बात करते हुए प.पू. गुरुजी ने उनके पिताजी पू. आई.एम. गर्ज साहेब को याद किया और सहज ही उनसे मिलने जाने का कार्यक्रम बना लिया। प.पू. गुरुजी संतों, युवकों, बहनों और मुक्तों (करीब 35) को लेकर रात को बारह बजे उनके घर पहुँचे। पू. गर्ज साहेब एवं परिवारजन स्नब स्नुश हो गये। पू. गर्ज साहेब ने प.पू. गुरुजी को याद दिलाया कि साल में एक बार सभी भक्तों के साथ मसूरी में उनके Royal Orchid Fort Resort को पावन करने ज़रूर आना है। तो, इस बार भी कार्यक्रम बनायें। पू. गर्ज साहेब ने कहा—

होटल में सबके धुन-भजन करने से पूरा वातावरण दिव्य हो जाता है और उन्हें भीतर से बहुत शांति मिलती है।

फिर धुन-भजन और अल्पाहार करके देर रात को डेढ़ बजे सभी मंदिर लौटे। हम सभी जानते हैं कि अलग कमरा होने के बावजूद, प.पू. गुरुजी मंदिर के चिदाकाश हॉल में सभी संतों, सेवकों और भक्तों के बीच पलंग पर सोते हैं। प.पू. गुरुजी की इच्छा और उनके प्रति लगाव के कारण करीब एक वर्ष से शक्तिनगर के पू. भीखूभाई झोंसा रोज़ रात को मंदिर आकर सोते हैं और प.पू. गुरुजी के साथ आनंद करते हुए उनकी लीलाओं का दर्शन करते हैं। वे भी प.पू. गुरुजी के साथ पू. गर्ज साहेब के घर गये थे। प.पू. गुरुजी का यह जॉखर देख कर वे गदगद हो गये और दूसरे दिन शाम को अपनी भावना व्यक्त करते हुए बोले—

86 साल की उम्र में प.पू. गुरुजी कल इस प्रकार गये और रात के बारह बजे भी वे एकदम फ्रेश थे। उनके मुखारविंद पर इतना तेज़ व उत्साह देख कर मैं तो हैरान ही था। कोई साधारण व्यक्ति तो ऐसा कर ही नहीं सकता। मैं दिल से मानता हूँ कि श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज उनमें रह कर कार्य करते हैं...

पू. गर्ज साहेब की भावना को साकार करते हुए 4 से 9 अगस्त 2023 मसूरी जाने का कार्यक्रम तय हुआ। 2 अगस्त 2023 की सुबह को 6 मुक्त पूर्व तैयारियों के लिए मसूरी गये और 4 अगस्त सुबह 10:15 बजे प.पू. गुरुजी ने तकरीबन 180 भक्तों के साथ पहाड़ों की रानी मसूरी 'ब्रह्मविद्या शिविर' करने के लिये प्रस्थान किया। प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य को देखते हुए



एवं भक्तों को उनके सान्निध्य का लाभ मिलता रहे, इस हेतु प.पू. गुरुजी के लिए vanity van की व्यवस्था करी थी। रास्ते में बारी-बारी से दो-तीन हारिभक्त vanity van में प.पू. गुरुजी के दर्शन का लाभ लेने जाते। रास्ते में तकरीबन दोपहर 1:15 बजे Bikanerwala रेस्टरां में सभी Lunch के लिए रुके और 7:30 बजे तक Royal Orchid Fort Resort पहुँचे। पू. गर्ज साहेब की धर्मपत्नी पू. इंदू आंठी के घुटने का operation होने के कारण उनका परिवार मसूरी नहीं आ पाया, लेकिन उनकी गैरहाजिरी में भी होटल के पूरे स्टाफ ने अच्छी तरह सबका सत्कार किया और कोई कमी न रहे उसका ख्रास ध्यान भी रखा। इससे ख्याल पड़ा कि पू. गौरव गर्जजी के होटल के स्टाफ ने पहले से ही प.पू. गुरुजी और भक्तों के आगमन के लिये पूर्व तैयारी कर रखी थी, जिससे कि उनकी अनुपस्थिति में किसी को कोई परेशानी ना हो। साथ ही उनके सकारात्मक व्यवहार से होटल के स्टाफ को भी प.पू. गुरुजी के प्रति कैसा अपनापन का भाव है!

5 अगस्त की सुबह 9 बजे सभी ने होटल के रेस्टरां में नाश्ता किया। तत्पश्चात् वहाँ के गार्डन में प.पू. गुरुजी की पूजा में सबने धुन की। तकरीबन 1:30 बजे प.पू. गुरुजी सभी भक्तों सहित Winter Hall में दोपहर का प्रसाद लेने गये। भोजन के बाद कुछ हारिभक्त मसूरी के माल रोड जा रहे थे। प.पू. गुरुजी को इस कार्यक्रम का पता चला, तो भक्तों को मूर्ति में निमण रखने के लिये प.पू. गुरुजी ने कहा—

बाजार से खाने के अलावा मेरे लिये कुछ लेकर आना, जो मैं उपयोग कर सकूँ। थोड़ी देर के बाद तो भक्तों के कहने पर प.पू. गुरुजी भी माल रोड जाने के लिए तैयार हो गये। प.पू. गुरुजी की गाड़ी के आस-पास खड़े मुक्तों और दुकानों पर प.पू. गुरुजी के लिये कोई वरचु ढूँढते भक्तों से मानो पूरा माल रोड स्वामिनारायणमय हो गया! क्योंकि संत के लिये प्रभु के अतिरिक्त कुछ भी विशेष नहीं। और तो और, उनका एक ही उद्यम होता है कि संबंध वाले सभी हमेशा प्रभु की मूर्ति से भरे रहें, एक पल भी उन्हें भूलें नहीं।

माल रोड से होटल लौट कर अल्पाहार के बाद **तारा हॉल** में सायं 7 बजे आरती हुई और फिर धुन-भजन से सभा का आरंभ हुआ। प.पू. गुरुजी के लिये सभी भक्त माल रोड से जो अलग-अलग वस्तुएं भावना रूप लाए थे, वो इसी दौरान प.पू. गुरुजी को अर्पण करी और पू. पुनीत गोयलजी ने आशिष याचना की—

...जहाँ गुरुजी और संत विराजमान होते हैं, वह स्थान मंदिर बन जाता है। गुरुजी की क्रिया वैतन्यलक्षी होती है। 2012 में जब पहली बार इस Resort में आने की बात हुई, तो गर्ज साहेब के व्यवहार से गुरुजी को उनका परिवार खूब भला लगा। गर्ज साहेब के परिवार को भी ऐसा हुआ कि कोई अलग अच्छे साथ हैं। उन्होंने एक बार बताया भी था कि हमने अपने मन



को रोकने की खूब कोशिश की, लेकिन गुरुजी के प्रेम में बह गये। आज ये *Resort* न होकर एक मंदिर बन गया है, क्योंकि गुरुजी, संत और हरिभक्त यहाँ बैठे हैं... कुरुक्षेत्र के बिड़ला मंदिर-गीता भवन के एक कमरे में बरसों पहले काकाजी ठहरे थे। गुरुजी के साथ एक बार हम वहाँ गये थे, तो उन्होंने संतों और हम सबसे वहाँ दंडवत् करवाया। तब मेरा अंतर हिल गया कि कमरे के दर्शन करना तो ठीक है, लेकिन काकाजी की प्रसादी की जगह की कैसी महिमा होगी? यूँ गुरुजी ने हमें सिखाया कि संत जहाँ एक बार जाते हैं, तो उनकी प्रसादी का स्थान हमारे लिए तो तीर्थ स्थल ही है। गुरुजी से ही सीखी हुई बात याद करते हुए कहता हूँ कि गुरुजी जब भी इस होटल में आते हैं, तो हमेशा 7205 नंबर के कमरे में ही रहते हैं। तो, **तारा हाल का रुम नंबर 7205 हमारे लिए तीर्थ स्थल है।** यह बात हम भूलें नहीं और... प्रार्थना है कि दूसरों के दोष जो हमें नज़र आते हैं, हमारी वो कसर टल ही जाये... गुरुजी की हर क्रिया का एक ही उद्देश्य है कि हम प्रभु की *consciousness* में रहें, सो गुरुजी हमें यह सिद्ध करा दें...

तत्पश्चात् प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए **पू. भीखूभाई झोंसा** ने अपना भाव व्यक्त किया—

यदि किसी को गोविंद का दर्शन करना हो, तो वे यही हैं। हमें ऐसे संत की गोद मिली है, जो हमारे लिए हमेशा 24X7 मौजूद हैं... गुरुजी का प्रेम हर किसी के लिए अपरंपार है... कभी भी गुरुजी का दिल मत दुःखाना। हमारा ऐसा कोई भी बर्ताव न हो कि जिससे उनका दिल दुःखे। वे बहुत *soft hearted* हैं। मेरी यही प्रार्थना है कि हम संप, सुहृदभाव और एकता से रहें... हमें गुरुजी का *follower* नहीं, *flower* बन कर रहना है। *Flower* जैसा कोमल होता है, वैसे हमारा हृदय बने और हम सबके साथ अच्छा बर्ताव करें... लकड़ी पानी में तैरती है, पर लोहा पानी में डूब जाता है। तो, गुरुजी के ज़हाज में कील की तरह लग कर में भी तैर रहा हूँ... मीरां जैसे गोविंद में समा गई, वैसे ही हम गुरुजी में समा जायें...

पू. भीखूभाई ने सखाभाव से जो बातें करी उसमें विनोद भी निहित था, लेकिन कहीं ना कहीं प्रभु ने ही उनमें प्रवेश होकर मुक्तों को कई जगह अंतर्दृष्टि भी कराई। रात को 9:00 बजे सभा का समापन हुआ और रात को प्रसाद लेकर, थोड़ा आनंदोब्रह्म करके सब विश्राम में गये।

प्रायः परिवार के अतिरिक्त, प्रत्येक व्यक्ति दिल से किसी अन्य से ऐसा नाता जोड़ लेता है, जो लहू के रिश्तों से कई गुणा बढ़ कर होता है। जिसे हिन्दी में मित्रता और अंग्रेजी में *Friendship* कहते हैं। मित्रता के माध्यम से संपूर्ण दुनिया में आनंद और शांति का संदेश स्थापित करते हुए 30 जुलाई 1958 से **अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस** की शुरुआत हुई। गुरुहरि काकाजी तो मित्रता से भी अधिक मैत्री पर अत्यधिक महत्व देते थे। उनका तात्पर्य था कि मित्रता में अपेक्षा निहित होने के कारण वह कभी न कभी टूट सकती है। जबकि मैत्री अपेक्षा से



परे होने के कारण अटूट होती है। उनकी परावाणी में अकसर मैत्रीभाव शब्द सुनने को मिलता है। अगस्त महीने के पहले रविवार के मुताबिक़ 6 अगस्त को **Friendship Day** था। सो, गुरुहरि काकाजी की दिव्य स्मृति करने और...

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम् देव देव॥

श्लोक के अनुसार हम सबके सर्वस्व प.पू. गुरुजी ने हमसे सही अर्थ में मैत्री दृढ़ करके, हमें मैत्रीभाव के इस मार्ग पर अग्रसर करने के लिये अथाह परिश्रम किया है और आज भी कर रहे हैं। नाश्ते के बाद, उनसे प्रार्थना करने के लिये 'तारा हॉल' में सभी एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी की पूजा को पू. मैत्रीस्वामी ने फूलों व चॉकलेट्स से बहुत ही सुंदर सजाया था और Digital Tablet की Screen पर मित्रता दर्शाते Hand Shake करते हुए दो हाथों की फोटो लगाई थी, जिस पर Friendship Day लिखा था। गुणातीत समाज की रीति-नीति से जीकर, इसकी एकता व अखंडता को बरकरार रखें, इस प्रार्थना से श्री ठाकुरजी की मूर्ति के समक्ष सभी के लिए **Friendship Band** रखे थे। सुबह करीब 10:00 बजे पूजा में धुन हुई। पूजा समाप्त होते ही 'तेरे जैसा यार कहाँ...' गाने की निम्न पंक्तियाँ बजाईं—

मेरी ज़िदगी संवारी, मुझको गले लगा के,

बैठा दिया फ़लक पे, मुझे खाक से उठा के,

यारा तेरी यारी को मैंने तो खुदा माना...

ये पंक्तियाँ सुन कर वहाँ उपस्थित सभी मुक्त खूब भावुक हो उठे और प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी के साथ अपने दिव्य संबंध की दृढ़ता करने हेतु अंतर से प्रार्थना की।

तत्पश्चात् पूजा में रखी Chocolates का प्रसाद लेकर सभी Winter Hall गये। यहाँ प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में भाइयों ने एवं प.पू. दीदी के साथ बहनों और भाभियों ने Musical chair game खेल कर आनंद किया। दोपहर के भोजन के पश्चात् वहाँ पर भजनों की अंताक्षरी खेलते और पू. प्रमीतभाई संघर्षी एवं पू. वर्षा भाभी के आने की राह देखते हुए शाम के पाँच बज गये। पू. प्रमीतभाई के आने के बाद सबने अल्पाहार किया। 2012 से जब-जब प.पू. गुरुजी एवं मुक्त Royal Orchid जाते हैं, तो पू. गौरव गर्जी सपरिवार एक दिन पहले ही पहुँच जाते हैं और मुख्य द्वार पर सबका आत्मीय स्वागत करते हैं। इस बार वे नहीं आ पाये थे और जैसे कि अब तो उनका होटल श्री ठाकुरजी एवं प.पू. गुरुजी के आगमन से मंदिर के समान ही बन जाता है, तो पू. गार्गी दीदी ने प.पू. दीदी से कहा— हर बार गौरव भड़या हम सबका स्वागत करते हैं। इस बार हम सब उनका स्वागत करें।



सो, प.पू. दीदी के साथ सभी बहनें, भाभियाँ और हरिभक्त मुख्य द्वार पर एकत्र हुए। पू. गौरव भड्या जैसे ही गाड़ी से उतरे, तो सत्संग के लड़कों ने नाचते हुए और सभी ने पुष्प वर्षा करके उनका स्वागत किया। अक्षरज्योति की साधक बहन पू. बाती को गर्ज परिवार ने दिव्य बेटी के रूप में अपने कुटुंब में शामिल किया है। सो, द्वार पर प.पू. दीदी के साथ आरती की थाली लेकर खड़ी पू. बाती ने अपने दिव्य पिता पू. गौरव भड्या को टीका करके प्रभु से मंगल प्रार्थना की। यह सारा नज़ारा देख कर पू. गौरव भड्या खूब भावुक हो गये।

इस दौरान प.पू. गुरुजी तारा हॉल में विराजमान थे। यहाँ आकर पू. गौरव भड्या ने प.पू. गुरुजी को प्रणाम किया। तत्पश्चात् 7:00 बजे संध्या आरती और धुन के बाद सभा आरंभ हुई। सेवक पू. विश्वास एवं पू. ऋषभ नरुला ने भजन प्रस्तुत किया। प्रासंगिक उद्बोधन की शृंखला में इटेड़ा के पू. श्यामलालजी के छोटे सुपुत्र पू. भीम यादवजी ने प.पू. गुरुजी से उन्हें हुए अनुभवों को साझा किया—

गुरुजी से व्यावहारिक और आध्यात्मिक सूझा मिलती है। वे छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखते हुए हमें जो सूचना देते हैं, उसमें हमारी ही भलाई है। कल्पवृक्ष हॉल में गुरुजी ने लिखवाया है कि आप यहाँ आये हो, बस इतना ही काफ़ी है। अब बोफिक्र हो जाइये। तो, गुरुजी के संबंध से हम सब निश्चिंत हो गये हैं...

पू. राजेश नरुलाजी के बड़े सुपुत्र पू. ऋषभ ने प.पू. गुरुजी के प्रति भाव व्यक्त किया—

मेरा मानना है कि गुरुजी को हमें कुछ सिखाने के लिये कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। वे अनुभव ऐसे करते हैं कि यदि उन्हें ध्यान से निहारें, उनकी बताई राह पर चलें तो कुछ न कुछ अपने आप ही सीखने को मिलता है और हम में कब बदलाव आ जायेगा, वो ख्याल भी नहीं पड़ेगा... मैंने कभी सोचा नहीं था कि प्यार करने वाला इतना बड़ा परिवार मिलेगा... शुरुआत में मंदिर आया, तो भगवान र्वामिनारायण के बारे में थोड़ा पता चला। तो, मन में प्रश्न हुआ कि वे कैसे होंगे? पर, गुरुजी का प्यार, उनकी परवरिश देख कर एहसास होता है कि वे ऐसे ही होंगे... ऐसा विश्वास है कि गुरुजी हम जैसे लाखों की नैया तारेंगे...

पू. प्रकाशचंद्र शर्माजी ने नम आँखों से हरिभक्तों के लिये प.पू. गुरुजी द्वारा किये जाते परिश्रम की स्मृतियाँ करते हुए कहा—

भक्तों के प्रति गुरुजी का अनहद प्रेम है, उसकी कोई सीमा नहीं है... उनके पास जीवन जीने की कला है... हर एक का गुरुजी के साथ अपना-अपना रिश्ता है, लेकिन जो जिस भाव से उनके साथ जुड़ा है, वैसा सुख गुरुजी उन्हें देते हैं... गुरुजी सबकी सुनते हैं, लेकिन हस्तक्षेप नहीं करते... अभिषेक बहुत अच्छी बात मुझे बताता है कि एक-दूसरे की झ़़़़़ट में ना जाओ।



हृधर क्या हो रहा है या उधर क्या हो रहा है, वो जो हो रहा है होने दो। तुम क्या कर रहे हो, बस वही देखो... गुरुजी के संबंध वाले सभी एकांतिक हरिभक्त हैं... वचनामृत और स्वामी की बातें यही बताती हैं कि हमें मिले प्रगट संत भगवान का स्वरूप हैं, दुनिया के मालिक हैं... तत्पश्चात् पू. आनंदस्वामीजी ने 'स्वामी की बातें' पढ़ी और उनका निचोड़ बताते हुए प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया—

सत्संग यानि क्या? तो, प्रभुधारक संत से संबंध दृढ़ करें और फिर उनकी मरजी के अनुसार वर्तें, वो ही सत्संग है। ऐसा सत्संग हमारे यहाँ होता है, जिसकी शुरुआत काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, प्रमुखस्वामी और महंतस्वामी ने कराई। तो, हम खूब भाग्यशाली हैं कि ऐसे जो जग में महाराज ने हमें रख दिया। रोज़ सुबह उठ कर महाराज को धन्यवाद देना कि आपने हमें जो ये सत्संग में रखा है, उसके लिये कोटि-कोटि धन्यवाद! ऐसा कृतार्थभाव रखेंगे, तो भक्त की श्रेणी में हमें प्रवेश मिल जायेगा...

अंत में हम सबके सच्चे-शाश्वत् मित्र श्री ठाकुरजी की प्रसादी के Friendship Band, प.पू. गुरुजी ने संतों, सेवकों, हरिभक्तों और छोटे लड़कों को तथा प.पू. दीदी ने बहनों, भाभियों व छोटी लड़कियों को पहनाये। फिर Winter Hall में प्रसाद लेकर, आनंदोब्रह्म करके विश्राम के लिये गये।

भगवान स्वामिनारायण एवं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्रसंग पढ़ने-सुनने से ज्ञात होता है कि उत्सवप्रिय प्रभु ने खूब विचरण करके मुक्तों को लाड़ लड़ाया और कई दिव्य स्मृतियाँ देकर निहाल किया। उसी गुणातीत परंपरा के प.पू. गुरुजी, संबंध वाले मुक्तों को सत्संग शिविर कराने के लिये इसलिए ले जाते हैं, ताकि वे सेवायें करके सुहृदभाव दृढ़ करते हुए एक-दूसरे को समझें, आपस में मेल-जोल बढ़े। इसी का दर्शन कराने के लिये **7 अगस्त** को नित्य पूजा के बाद, करीब 11:00 बजे प.पू. गुरुजी सभी भक्तों को साथ लेकर **धनोल्टी** के लिए रवाना हुए। दोपहर करीब एक बजे धनोल्टी के ईको पार्क (अम्बर) पहुँचे। यहाँ के सुहावने मौसम में प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में आनंद करके उनसे स्मृतियाँ प्राप्त करने हेतु पू. मैत्रीस्वामी, पू. योगीस्वामी ने स्वयंसेवक युवकों और पू. नित्या दीदी, पू. गार्गी दीदी ने बहनों व भाभियों तथा रॉयल ऑर्किड फोर्ट के स्टाफ के सहकार से सबके बैठने और अल्पाहार की इतनी अच्छी व्यवस्था की थी कि मानो जंगल में मंगल हो गया था। बच्चों ने झूले झूल कर खेल गतिविधियाँ करके आनंद किया।

दोपहर 3:00 बजे यहाँ से निकल कर 5:00 बजे तक रिजॉर्ट पहुँच कर, कई मुक्त तो थकान के कारण अपने-अपने कमरे में चले गये, परंतु प.पू. गुरुजी तो एकदम फ्रेश बैठे रहे। प.पू. गुरुजी का ऐसा दर्शन करते हुए एक मुक्त ने प्रार्थना करी—



प्रभु! हमें भी आपके जैसी थोड़ी ऊर्जा दे दीजिये...

सहजता से प.पू. गुरुजी ने तुरंत ही कहा—

अगर मैं इतनी ऊर्जा तुम्हें दे दूँगा, तो तुम सब में दासत्व नहीं रहेगा।

प.पू. गुरुजी का ऐसा सूचन सुन कर ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के वचन याद आये कि वे हमेशा प्रार्थना रूप कहते — हे प्रभु, दास का दास बनाना और प.पू. गुरुजी भी अक्सर कहते हैं कि भगवान की मूर्ति भूल कर हम किसी मान में झूल कर भटक ना जायें, इसलिए प्रभु हम में स्वभाव चिपका कर ही भेजते हैं। गुणातीत स्वरूपों को कोटि-कोटि धन्यवाद कि हमें हँसी-खेल में हमारी प्रगति के पथ पर अग्रसर करते हैं।

सायं तारा हॉल में आरती के बाद धुन से सभा आरंभ हुई। पू. ऋषभ गोयल एवं सेवक पू. विश्वास ने भजन प्रस्तुत किये। तत्पश्चात् सर्वप्रथम मुंबई के पू. दीपक अग्रवाल ने जुलाई महीने में प.पू. गुरुजी द्वारा मुंबई की surprise visit की खूब भावुक हृदय से स्मृतियाँ ताज़ा कीं — बचपन से अब तक मेरे हर जन्मदिन की शुरुआत फोन पर गुरुजी की आवाज सुन कर ही होती आई है। पर, इस बार तो गुरुजी surprise में स्वयं घर पर आ गये। इस आयु में भी भक्तों को राजी करने की उनकी भावना है... गुरुजी के साथ की एक भी पल ऐसी नहीं कि वे आनंद ना कराते हों। गुरुजी से यही प्रार्थना कि आप हमसे जैसा करवाना चाहते हैं, वैसा हम कर पायें...

प.पू. गुरुजी के प्यार, अपनेपन और उनकी दिव्यता का अनुभव कराते हुए पू. अमित शुक्ला ने अपने पिताजी पू. लक्ष्मी शुक्लाजी की सेवा एवं प.पू. गुरुजी के प्रति उनकी भक्ति, निष्ठा और प्रीति का वर्णन करते उन्हें अपना रोल मॉडल कह कर नवाज़ा। साथ ही प.पू. गुरुजी ने पू. अमित शुक्ला के चैतन्य के लिये जो परिश्रम किया है, उसकी गहनता समझते हुए प.पू. गुरुजी को नमन किया।

प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि यदि माता-पिता ने ठीक से सत्संग किया होता है, तो वही संस्कार उनके बच्चों में आते हैं। प.पू. गुरुजी की आशिष से पू. लक्ष्मी शुक्लाजी और उनकी पत्नी सौ. ममता भाभी की निष्ठा इतनी पक्की है कि उन्होंने अपनी बेटी को खुद ऐसा कह कर भगवान भजने के रास्ते पर अग्रसर किया कि जगत में तो सभी (लौकिक) सुख हैं, लेकिन जो आनंद भगवान की मूर्ति में है, वो जगत में ले नहीं सकते। और तो और, प्रभु की कृपा से उनके घर में नई आई पुत्रवधू सौ. शिल्पी भी खूब आत्मीयता से जुड़ गई है कि एहसास ही नहीं होता कि वो सत्संग में बिलकुल नई है। लेकिन, पूर्व की ज़रूर होगी, तभी ऐसा लगाव हो सकता है। तदोपरांत पू. राम वर्माजी ने संक्षिप्त में प.पू. गुरुजी के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करते हुए कहा — एक बार गुरुजी ने बताया था कि लोग अपनी मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए वैष्णो देवी जाते



हैं, लेकिन यदि हम काकाजी की समाधि की 7 या 11 प्रदिक्षणा करेंगे, तो काकाजी हमारा काम फटाफट कर देंगे। तब से मैं अपनी माताजी की तबीयत के लिए 3 प्रदिक्षणा जलार करता हूँ। फिर जब से गुरुजी की तबीयत के बारे पता चला, तो मैं उनकी तबीयत के लिए भी 3 प्रदिक्षणा करता हूँ। आप लोग जब भी मंदिर जायें, तो समाधि पर गुरुजी और दीदी के स्वास्थ्य के लिए 3-3 प्रदिक्षणा जलार करें।

अंत में, पर्वई के प.पू. राजूभाई ने गुरुहरि काकाजी के साथ की अपनी दिव्य स्मृतियों का वर्णन करते हुए मानो गुरुहरि काकाजी की प्रत्यक्ष हाज़िरी का एहसास करा दिया। तत्पश्चात् रात के प्रसाद के लिए सभी ने विंटर हॉल में प्रस्थान किया।

8 अगस्त की सुबह प.पू. गुरुजी की धुन और नाश्ते के बाद सभी Resort के प्रांगण में एकत्रित हुए। **ब्रह्मविद्या शिविर 2023 – मसूरी** की सामूहिक स्मृतियों हेतु, प.पू. गुरुजी के साथ संतों, सेवकों, हरिभक्तों की एवं प.पू. दीदी के साथ बहनों व भाभियों की ग्रुप फोटोज़ खींचे गये। तत्पश्चात् प्रति वर्ष की तरह इस बार भी प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी ने Resort के Staff को स्मृति भेंट दीं। दोपहर के भोजन के बाद बच्चों ने games का आनंद लिया व कुछ लोग माल रोड घूमने गये और कुछ George Everest's House घूमने गये। शाम को अल्पाहार के बाद 7 बजे ‘तारा हॉल’ में शिविर की अंतिम आरती करके, धुन-भजन से सभा का आरंभ हुआ। प.पू. गुरुजी से किस प्रकार संबंध हुआ है, उन सुनहरे पलों को याद करते हुए पू. गौरव गर्गजी ने कहा – 2012 में प्रमीतजी ने मंदिर के ग्रुप से परिचित करवाया और गुरुजी से पहली बार मिला तो मुझे (*positive energy*) सकारात्मक ऊर्जा महसूस हुई... 2012 से 2023 गुरुजी के साथ संबंध हुए 11 साल हो गये। शुरुआत में गुरुजी के आने से पहले मुझे *tension* होती थी, लेकिन अब तो मैं कुछ सोचता नहीं। इस बार मैंने एक बार भी Resort में फोन नहीं किया कि क्या करना है? Resort का Staff used to है। सब कुछ अपने आप हो गया और... जिस प्रकार मेरा सत्कार किया, जो प्यार दिया उसे मैं ब्यां नहीं कर सकता। अब यह होटल मेरे से ज्यादा आपका है गुरुजी!

एक प्रसंग याद आता है कि मंदिर के किसी उत्सव में मेरे पापा गुरुजी के साथ ही बैठे हुए थे। वह देख कर मुझे बहुत अच्छा लग रहा था कि गुरुजी और पापा एक ही फ्रेम में दिख रहे थे, तो मैंने उस तरह उन दोनों की फोटो भी खींचने की कोशिश की। चूंकि मेरे पापा ने जैसा मुझे सिखाया है, तो मैं गुरुजी को हमेशा एक *father figure* की तरह देखता हूँ और मैं मन में ये सोच ही रहा था कि तभी गुरुजी ने एकदम मुझसे कहा – **तेरे दो-दो फादर हैं...** ऐसा कह कर गुरुजी ने मानो मोहर लगा दी। इससे बढ़ कर मेरे लिये क्या बात हो सकती है? तदोपरांत मुंबई के पू. रमेश त्रिवेदीजी ने हमेशा की तरह अलंकारिक भाषा में प.पू. गुरुजी के



प्रति अपने भाव प्रस्तुत किये। फिर गुजरातीभाषी होने के कारण पू. सरयूविहारीस्वामी ने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की कि वे गुजराती में जो आशिष याचना करना चाहते हैं, उसका प.पू. गुरुजी हिन्दी में साथ-साथ निरूपण करते रहें, ताकि हिन्दीभाषी वह समझ सकें। प.पू. गुरुजी ने सब पर खूब कृपा करके उनकी यह प्रार्थना स्वीकारी और निम्न रूप में आशिष वर्षा करके निहाल कर दिया—

सरयूस्वामी का कहना है—

- * प्रकरण 2 की 15वीं बात में गुणातीतानंदस्वामी ने संग का रूप बताया है कि लोग साथ में भले रहते होंगे, लेकिन आपस में संग नहीं करेंगे। स्वामी के समय गुजरात में उन्होंने गांव था, जो अब शहर है। वहाँ के एक सेट का उदाहरण देकर स्वामी ने समझाया कि 60 जनों का उनका संयुक्त कुटुंब था, लेकिन संग के नाम पर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ उनका संबंध था, बाकी सबके साथ सिर्फ हैलो-हाय, शिष्टाचार था...
- * खाना खाने बैठते हैं, तो फट से मुँह में डाल लेते हैं, वो धास खाने के बराबर है। जबकि भले ही दो सेकेंड भगवान की स्मृति करके मुँह में डालें, तो वो खाना खाया कहा जाये। कोई सत्संगी भले ही स्वामिनारायण भगवान का भजन करता है, साधु का समागम करता है, वो भी हमें यदि भगवान की स्मृति ना करवाये, प्रभु को याद ही ना करे, तो दूसरे जो सत्संग ना करने वाले प्रभु स्मरण नहीं करते, तो इन दोनों में क्या फँक्क है?
- * जो ऐसा सोचता है कि काम निबटा कर मैं भजन करने बैठूँगा, तो वो गलत है और वो किसी प्रकार की आशा भी नहीं रखे। काम तो किसी का कभी भी पूरा हुआ ही नहीं और पूरा होने वाला ही नहीं है। इससे तो अच्छा है कि **काम को एक ओर रख कर पहले भजन कर लेना।** जीव जन्म लेता रहता है। वृक्ष का देह मिले; तो उसका आयुष्य तो लंबा होता है, लेकिन उसमें प्रभु भज नहीं सकते। वृक्ष स्वामिनारायण, स्वामिनारायण या अपने इष्टदेव को याद करे, ऐसा तो कहीं सुना नहीं है। पशु-पक्षी, कबूतर, तोता वगैरह की देह मिले, तो वहाँ भी प्रभु का भजन नहीं होगा। केवल मनुष्य देह में ही भगवान का भजन हो सकता है। पर, जो धन पाने की प्रवृत्तियों में लगा रहता है, वो भगवान नहीं भज सकते। हाँ, धन पाने की लालसा में लक्ष्मीजी की आराधना ज़रूर होती रहेगी। दूसरी ओर गरीबी की अवस्था हो कि जहाँ खाने को भी न मिले, तब भी भगवान का भजन नहीं हो सकता। यदि बीमारी-रोग लग गया हो, तब भी भगवान नहीं भज सकते क्योंकि उसमें कॉफी बॉंदिशें हो जाती हैं कि ज्यादा बोलना और सोचना नहीं। स्वामी ने ये सारी विपत्तियाँ बताई और कहा कि वर्तमान समय में हर तरीके से सब सानुकूलता है, इतनी अनुकूल परिस्थितियों में तुम्हें सेट करके दी हैं, फिर फिलहाल प्रभु का भजन नहीं करोगे, तो कब करोगे?



- * सरयूस्वामी के लिये हर तरह से अनुकूल संयोग बन गये हैं। सब सानुकूल है और कोई तकलीफ नहीं है, तो mind फ्री है। Mind की प्रकृति ऐसी है कि वो चुपचाप रह नहीं सकता, सोचता ही रहेगा। हम रात को सपने में भी जाते हैं, तो वो बताता है कि हम सोचते ही रहते हैं। तो, भक्तों के साथ की झँझट वगैरह या उनके दोष देखने के कारण भगवान के साथ का संबंध टूटता जाता है।
- * हरिप्रसादस्वामीजी ने एक बात बताई थी कि *Albert Einstein* ने अपने *assistant* से कहा था कि 6 महीने अगर तू मेरे साथ में रहेगा, तो मुझे देखते-देखते खुद मेरे जैसा *scientist* बन जायेगा। 6 महीने बीतने के बाद उस व्यक्ति से *Einstein* ने पूछा कि यहाँ से जाने के बाद घर पर तू क्या करता है? वो बोला कि वैसे में फैल-फिलूर में नहीं जाता, मेरा खानापीना भी शाकाहारी है, लेकिन खाना खाने के बाद *mind relax* करने के लिये लेट कर थोड़ी देर टी.वी. देखता हूँ। *Einstein* ने पूछा कि टी.वी. में क्या देखते हो? वह बोला कि पिक्चर देखता हूँ। तो *Einstein* ने बोला कि बस फिर पिक्चर ही देखा करो। ऐसे ही भगवान का भजन नहीं होगा।
- * सरयूस्वामी कहते हैं कि उनकी नज़र-आँखें दूसरों की तरफ चली जाती हैं, उनके दोष देखती हैं वो ना कर पायें, ऐसी कृपा करना, मददरूप-सहायरूप होना। पर, इसके लिये तो खुद भजन करना पड़ता है। भगवान ने संतों को जीवों की परवरिश के लिये, उन्हें साथ देने के लिये ही तो धरती पर रखा है। तो, इसके लिये कोई प्रार्थना की ज़रूरत नहीं है। हाँ, इस रास्ते चलने के लिये जो भावना करेगा, उसके लिये प्रभु सहायरूप होते ही रहेंगे।
- * गुरुजी के जीवन प्रसंग से नोट किया है कि कोई साधु की बात नहीं भी माने और अपने ढंग से जीता हो, फिर भी उसकी *security* के लिये साधु हमेशा तत्पर रहता है और उस पर नज़र रखे रहता है। जबकि ऐसा कुछ मेरे साथ बने कि मेरी बात कोई ना माने, तो मैं ऐसा नहीं कर सकता। आशीर्वाद देना कि मैं इस रास्ते चलूँ।
- * वचनामृत में महाराज ने बताया है कि हर तरीके से क्राबिल होते हुये भी उन्होंने मनुष्य के रूप अपनी पहचान बनाये रखी, जो कि हम नहीं कर सकते। थोड़ा-सा भी ऐश्वर्य-शक्ति आ जाये, तो *show off* करेंगे कि हम भी कुछ कम नहीं हैं। जबकि बड़े संत तो हर प्रकार से समर्थ होने के बावजूद भी दास का दास बन कर रहते हैं। गुरुजी हमें सिखाने के लिए खुद ऐसा वर्तते हैं। रात को आधी नींद में भी जब उन्हें करवट लेनी होती है, तो कहते हैं कि विश्वास या अभिषेक से पूछो कि अब मैं दूसरी साफ़ उपवास ले सकता हूँ। इतनी हद तक तो हम कर ही नहीं सकते।
- * संत की सामर्थ्य जैसे गुण आयें, उसके लिये गुरुजी विरोध प्रकृति वाले के साथ मैत्री करने



- की बात करते हैं। जैसे कोई शांत प्रकृति का हो और दूसरा जल्दबाज हो, तो उसके साथ दोस्ती करने की मेरी कोशिश जारी रहे, ऐसा आशीर्वद देना।
- * गुरुजी का विज्ञन कितना पावरफुल है। सालों पहले (1990) एक बार ताड़देव में काकाजी के लम में गुरुजी सोये हुए थे। तब सरयूस्वामी की पूर्वश्रम की मधर (पू. कुसुमबा) वहाँ आई होंगी। उनकी चाहना थी कि किसी भी तरह गुरुजी को जय स्वामिनारायण कहलवाऊँ। बात कहलवाने की कोई वजह नहीं थी, लेकिन सहज ही उन्होंने गुरुजी को कहलवाया कि आप मेरे लड़के को साधु बना दोगे? उन्हें ऐसा कि गुरुजी को ऐसा कुछ कहलवाऊँगी, तो वे जवाब में कुछ तो कहेंगे। तो गुरुजी ने कहलवाया कि मैं आपके लड़के को साधु बनाऊँगा, लेकिन अभी नहीं। जब समय आयेगा तब बनाऊँगा और तब तुम मना नहीं करना। तो, 31 साल के बाद 2021 में गुरुजी ने वो क्रौल पूरा किया।
- * बाहरी तौर पर गुरुजी साधारण दिखते हैं... सरयूस्वामी का ऐसा मानना है कि गुरुजी सिर्फ 29 मिनिट ही सोते हैं। वे हम सबके लिये पूरी रात धून करते हैं। रात को 3 बजे वे करवट भी बदलेंगे, तो हमें लगता है कि वे सोये हुए हैं, पर नहीं वे जाग्रत होते हैं और यदि दरवाजे से कोई आया-गया, तो पूछते रहते हैं कि कौन आया? कहाँ से आगाज आ रही है? सोफे पर भी बैठे होंगे, तो जैसे माला फिराते हैं, वैसे बिना माला के हमेशा गुरुजी की उंगलियों का दर्शन होता है।
- * ‘स्वामी की बात’ के 4 प्रकरण की 3 बात में लिखा है कि महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को आशीर्वद दिया है कि तुम्हारा जो भी संकल्प होगा, वो मैं इसी जन्म में पूरा करूँगा। वैसे ही काकाजी ने गुरुजी को वचन दिया है कि वे किसी को जो भी आशीर्वद देंगे, कुछ भी करेंगे-जो बोलेंगे वो काकाजी पूरा करते रहेंगे। गुरुजी ने कुछ समय पहले एक हारिभक्त से कहा कि तूने जो भी मुझे बताया, वो तो पूरा करूँगा और जो नहीं भी बताया, वो भी पूरा करूँगा। बस, मंदिर में ठाकुरजी को जो भोग लगता है, तू एक महीने तक मंदिर आकर थाल में से प्रसाद खाया करना। जैसा आहार लेते हैं, वैसी डकार आती है। भगवान का प्रसाद 1 महीने तक खाते रहेंगे, तो अंदर से सब मलीन भावना टल जायेगी और व्यवहार-प्रकृति सब ठीक-ठाक हो जायेगा...
- पू. सरयूस्वामीजी का वक्तव्य पूरा होने के बाद पू. विजयपालजी ने उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद दिया कि इस ज़रिये से काफ़ी समय के बाद बहुत देर तक प.पू. गुरुजी के आशीर्वचनों का लाभ मिल सका।
- अंत में सेवक पू. अभिषेक ने सभी की ओर से प.पू. गुरुजी से प्रार्थना करते हुए कहा— गुरुजी का *energy level* बहुत... जब से मसूरी आए हैं, एक भी दिन दोपहर का आराम नहीं किया...



गुरुजी हमें व्यावहारिक रीति से आध्यात्मिक सूझा देते हैं—

- * खाना कितना भी अच्छा हो, पर यदि उसमें नमक नहीं होगा, तो सब बेकार लगेगा। ऐसे ही कोई भी काम शुरू करने से पहले प्रभु को याद करके प्रार्थना करनी चाहिये कि आप सारे दिन मुझे संभाल लेना।
- * जैसे खाना खाये बिना रह नहीं सकते, ऐसे ही हमारी आत्मा भजन बिना रह ना सके। सो, हमें भजन करने की आदत डालनी चाहिये। दिमाग़ से ना सोच कर भजन करेंगे, तो महाराज प्रसंग खड़े नहीं करेंगे।
- * सुबह उठते ही महाराज-काकाजी को हमेशा धन्यवाद करें और सुहृदभाव से जीते हुए प्रार्थना करते रहें कि सभी मिलजुल कर रहें।

एक बार गुरुजी सुबह उठ कर महाराज व सभी स्वरूपों की मूर्तियों को प्रणाम कर रहे थे।

तब वहीं मौजूद पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी ने उनसे पूछा कि आप क्या प्रार्थना करते हैं?

तब गुरुजी ने कहा—‘आरे-बृहद गुणातीत समाज की हर प्रकार से रक्षा हो...’

तो, गुरुजी हम सभी के लिए प्रार्थना करते हैं... हम सब जब से गुरुजी के आश्रय में आये हैं, तब से वे लगातार हम पर नायगरा फॉल की तरह अपना प्रेम लुटा रहे हैं। वे हमारे कोई दोष नज़र में लेते ही नहीं। तो, गुरुजी के प्रेम को गंभीरता से समझें...

ऐसी मार्मिक प्रार्थना से सेवक पू. अभिषेक ने ब्रह्मविद्या शिविर का समापन किया। दो-तीन दिन लगातार कुछ मुक्तों के जन्मदिन थे, सो उस निमित्त केक का प्रसाद वितरित होने के बाद सभी Winter Hall में प्रसाद लेने गये।

9 अगस्त की सुबह 8:00 बजे तक सभी अपना सामान पैक करके तैयार हो गये और प.पू. गुरुजी की पूजा में धुन एवं नाश्ता करके 10:00 बजे के करीब रवाना होकर, रात को 9:00 बजे तक दिल्ली मंदिर पहुँच गये।

वैसे तो मसूरी में सभा स्थल पर ‘ब्रह्मविद्या सत्संग शिविर’ नाम का बोर्ड लगाया था। लेकिन, प.पू. गुरुजी ने ‘ब्रह्मविद्या शिविर’ करवाया और उसका रहस्य समझाते हुए कहा—‘सुहृदभाव से वर्तों, वो ब्रह्मविद्या! उसमें सत्संग (शब्द) लगाने की ज़रूरत नहीं...’

ऐसी शिविरों द्वारा प.पू. गुरुजी का यही उद्यम होता है कि सब मुक्त एक-दूसरे के नज़दीक आये। सो, दिन में तो प.पू. गुरुजी ने कई स्थलों को तीर्थत्व प्रदान किया व शाम को आरती, धुन, कथावार्ता तथा भक्तों के अनुभवों से सबके अंतर को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान की और... रात को 11 बजे के बाद आनंदोब्रह्म से वातावरण एकदम हल्का बना कर, सभी प्रकार की आशाओं-चिंताओं से मुक्त होकर, सिर्फ़ प्रभु में झूंबे रहने की क़वायद देकर, मुक्तों को निहाल किया। निरंतर हमारी ऐसी परवरिश करने के लिये प.पू. गुरुजी को कोटि कोटि नमन!!

30 अगस्त – रक्षाबंधन निमित्त महापूजा...



रक्षाबंधन



सोने की धातु जो हर ऋतु में एक जैसी रहती है
ऐसे ही प्रत्येक संयोग में हमारी ग्रीति प.यू. गुरुजी व प.यू. दीदी से दृढ़ रहे...



रक्षाबंधन



मुक्तों को श्री ठाकुरजी की प्रसादी का रक्षाकवच प्रदान करतीं प.पू. दीदी व बहनें...



रक्षाबंधन





प्रगट प्रभु के सान्निध्य में रक्षाबंधन

30 अगस्त 2023, बुधवार को प्रति वर्ष की भाँति, प.पू. गुरुजी से श्री ठाकुरजी की प्रसादी का रक्षाकवच प्राप्त करने हेतु पू. मैत्रीशीलस्वामी ने सुबह 9:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में महापूजा आरंभ की। श्री ठाकुरजी के सिंहासन को गुणातीत समाज के ध्वज के रंगों की बड़ी राखियों से सजाया था। प.पू. गुरुजी की मूर्ति को संप, सुहृदभाव व एकता दर्शाते डिजाईन की बड़ी राखी अर्पण की थी और इसी प्रकार प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे लिखे रक्षाबंधन में 'ब' शब्द पर ऐसी ही राखी अंकित की थी और साथ ही श्री अक्षरपुरुषोत्तम सहित गुरुहरि काकाजी की मूर्ति दर्शनीय थी। श्रावण मास के कारण श्री ठाकुरजी की छोटी मूर्तियाँ तिरंगे से बने हिंडोले पर विराजमान थीं। पू. हंसा बहन संघवी का आज 90वाँ जन्मदिन था, सो उनके आगमन पर खड़े रह कर सबने तालियों से उनका अभिवादन किया। महापूजा की आरती व मंत्रपुष्पांजलि के बाद पू. राकेशभाई ने 'कमाल है गुरुजी आये मेरे जीवन में...' भजन प्रस्तुत किया। तदोपरांत आसन पर प.पू. गुरुजी विराजमान हुए और उनकी नित्य पूजा में धुन करने के बाद महापूजा का समापन हुआ।

दिल्ली या भारत से बाहर रहते जो मुक्त राखी के त्यौहार पर नहीं आ पाते, उन्हें प.पू. गुरुजी की आज्ञा से प.पू. दीदी, पू. स्मिता दीदी व पू. खाति दीदी की ओर से संदेश के साथ महापूजा की प्रासादिक राखियाँ भेजी जाती हैं। सो, पू. राकेशभाई ने वह निम्न संदेश पढ़ा—

राखी

30.8.2023, बुधवार

प्रिय आत्मीय अक्षरबंधुओं...

राखी के पावन धर्म पर अक्षरज्योति से
आपकी बहनों के भावभरे जय स्वामिनारायण!

रक्षाबंधन अर्थात् रक्षा का धर्म!

भगवान् स्वामिनारायण ने कहा है—

तैराक भले ही कितना माहिर क्यों ना हो, लेकिन वह स्वतः महासिंधु पार नहीं कर सकता। पर, यदि वह नाव में बैठ जाये तो पार कर पायेगा। इसी प्रकार, जीव स्वतः मवसिंधु पार नहीं कर सकता; सत्पुरुषस्वर्पी नाव उसे मवसागर से तार देगी।

महापूजा की प्रासादिक राखियों के रूप में उपरोक्त आशीर्वचनों को साक्षात् मानते हुए हम अपने जीव के रक्षण हेतु प्रार्थना करके धन्य हैं...

अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने भी अपनी बातों में कहा है—

दुःख के समय महाराज और उनके साथ का समरण करना। बच्चे माँ-बाप से नहीं कहते कि हमारी रक्षा करो! माँ-बाप स्वयं उनकी रक्षा करते ही हैं। इसी प्रकार महाराज से जुड़े रहेंगे और अन्य कहीं भागदौड़ नहीं करेंगे, तो महाराज तो सर्वोपरि-समर्थ भगवान् हैं, वे रक्षा करेंगे ही।

श्रीजी महाराज ने यह भी कहा है—



जो हमारी आज्ञा का पालन करता है; वह भले ही हमसे दूर रहे पर वो हमारे पास है और वो जहाँ
भी हो, वहाँ हमें उसकी रक्षा करनी ही यड़ती है...

तात्पर्य यह है कि हमें प्रभु व संत की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना है, है और है ही!
इसी राह पर अग्रसर होकर हम सही अर्थ में राखी का उत्सव मनायें...

अक्षरज्योति से आपकी ही बहनों की ओर से—

आनंदी-स्मिता-स्वामिति के ‘रक्षाबंधन’ के जय स्वामिनारायण!

इसका निरूपण करते हुए प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया—

सत्पुरुष रूपी नाव जन्म-मरण के चक्कर से छुड़ा देती है। संत आखिरी जन्म करा देते हैं, जीव
को अक्षरलूप बना कर अमर कर देते हैं... इसके लिये एकनिष्ठ रहेंगे कि सर्वोपरि भगवान् जो
हमें मिले हैं; वे ही हमारे पल-पल के कर्ता-हर्ता सब कुछ हैं, ऐसा दृढ़ता से मानें। महाराज ने
एकनिष्ठा के साथ आज्ञा की भी बात करी कि निष्ठा है-निष्ठा है, यूँ मन को बहलाया ना करें।
महाराज की हर एक छोटी-बड़ी आज्ञा का पालन करते रहें। इसके लिये ज़रूरी नहीं, भगवान्
और संत के साथ-साथ ही रहें। भले हजारों माईल दूर लंदन, अमेरिका या फ्रांस कहीं भी रहता
हो; पर स्वामिनारायण का संबंध होगा, ऐसे संत के प्रति निष्ठा होगी, तो वे हर जगह उसकी
रक्षा करेंगे ही...

तत्पश्चात् निम्न प्रार्थना करते हुए प.पू. गुरुजी को चाबी और सूर्य के आकार की दो राखियाँ,
सेवक पू. अभिषेक द्वारा अक्षरज्योति की बहनों ने अर्पण करवाई—

* पिछले वर्ष चांदी की चाबी वाली राखी बहनों की ओर से प.पू. गुरुजी को अर्पण की थी, तब
उन्होंने कहा था कि अगले साल सोने की राखी बहनें भेजेंगी। आज प्रार्थना के साथ सोने
की चाबी की राखी अर्पण कर रहे हैं कि सोने की धातु जो हर ऋतु में एक जैसी रहती है,
ऐसी हर संयोग में हमारी प्रीति गुरुजी व दीदी से दृढ़ रहे... योगीगीता में लिखा है कि हम
आज प्रार्थना करें और कल पलट न जायें... हमारी मति में कभी फेर न पड़े...

* 26 अगस्त की सायं सहज ही प.पू. गुरुजी ने बहनों को कहलवाया कि मैं तो सूर्य वाली
राखी बहनों की ओर से बंधवाऊंगा। सो, गुरुहरि काकाजी के हस्ताक्षर की सूर्य वाली राखी
इस प्रार्थना से अर्पण करते हैं कि आपके दिव्य प्रकाश से ही तो हमारा जीवन उज्ज्वल है,
हमारा अस्तित्व है। आपको राजी करने की लगन में हमारा मनरूपी ग्रहण बाधा न डाले...

गुणातीत संत प्रत्येक जीव को हर प्रकार से सुख देने के लिये उनसे अलौकिक संबंध बना कर,
प्रभु से जोड़ने का उद्यम करते हैं। इसलिये वे किसी के पिता, भाई, बंधु, सखा सब कुछ बनते हैं।
सो, प.पू. गुरुजी को भाई के रूप में मानने वाली कई भाभियों ने अपने पतियों द्वारा प.पू. गुरुजी
को राखी अर्पण करवाई। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के वरद हस्तों से भाइयों ने और प.पू. दीदी व बहनों
द्वारा भाभियों ने राखी बंधवा कर प्रभु का रक्षाकर्वच प्राप्त करके, महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।



ब्रतोत्सवसूची

- (1) दि. 29.9.'23, शुक्रवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व
- (2) दि. 1.10.'23, रविवार — ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का स्मृति पर्व
प.पू. दिनकर अंकल का प्राकट्य दिन
- (3) दि. 2.10.'23, सोमवार — ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व
- (4) दि. 8.10.'23, रविवार — भगवान स्वामिनारायण, अनादि महामुक्त जागास्वामी
एवं ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज का स्मृति पर्व
- (5) दि. 9.10.'23, सोमवार — ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व
- (6) दि. 10.10.'23, मंगलवार — एकादशी, ब्रत
- (7) दि. 11.10.'23, बुधवार — मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी
एवं गुरुहरि काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
- (8) दि. 12.10.'23, गुरुवार — अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व
- (9) दि. 15.10.'23, रविवार — नवरात्रे प्रारंभ
- (10) दि. 24.10.'23, मंगलवार** — **दशहरा**
ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का पार्षदी दीक्षा दिन
- (11) दि. 25.10.'23, बुधवार — एकादशी, ब्रत
- (12) दि. 26.10.'23, गुरुवार — मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की अंतर्धान तिथि
- (13) दि. 28.10.'23, शनिवार** — **शरद पूर्णिमा**
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का प्राकट्य दिन
ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का भागवती दीक्षा दिन
प.पू. दिनकर अंकल की प्राकट्य तिथि
- (14) दि. 9.11.'23, गुरुवार — एकादशी, ब्रत—वाघ बारस
- (15) दि. 10.11.'23, शुक्रवार** — **धनत्रयोदशी**
- (16) दि. 11.11.'23, शनिवार** — **अक्षरचौदस**
- (17) दि. 12.11.'23, रविवार** — **दीपावली**
- (18) दि. 13.11.'23, सोमवार** — **अन्नकूटोत्सव**
- (19) दि. 14.11.'23, मंगलवार** — **नूतन वर्ष**
- (20) दि. 15.11.'23, बुधवार** — **भैया दूज**
- (21) दि. 18.11.'23, शनिवार** — **लाभपंचमी**

R.N.I. 28971/77 (Air Mail)

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine—Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— Printer, Publisher, Editor : SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A- 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052



Bhaav Samadhi



APSM

Most of you must be getting Mandir Information Messages about Functions, Events And Sabha, on **WhatsApp**.

Those who are not getting please save this number
7011521488

Save the above number by name –

Our Temple Updates

After saving, please send Jay Swaminarayan message

on the above number and mention your name also.
Thanks!

Install Our Mobile Applications

Bhaav Samadhi - APSM

This app contains...

Arti, Bhajan, Swaroop Dhun
Mahapooja Shlok
Vachanamrut, Swamini Vato
H.D. Kakaji Maharaj's Blessings
P.P. Guriji's Blessings



This app contains...

Calender, Murti Darshan,
Function Photo & Video
Mandir Books
Patrika - Delhi (Bhagwat Kripa)
Powai (Snehal Sindhu)



आप में से अधिकांश मुक्त **WhatsApp** द्वारा मंदिर में हीते उत्सवों, कार्यक्रमों एवं सत्संग समाजों की सूचना प्राप्त करते होंगे।

यदि किसी को ये सूचनायें नहीं मिलतीं, तो कृपया

7011521488

नंबर को **Our Temple Updates** के नाम से save कर लें और एक बार अपने नाम के साथ इस नंबर पर जय स्वामिनारायण का संदेश भेज दें।

धन्यवाद!

